

Bhojprabandhasar
by
Banshidharney.

भोजप्रबन्धसार

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिम देशाधिकारी
श्रीयुत नव्वाब लेफ़िनेण्ट गवर्न्मेर बहादुरकी

आज्ञानुसार

श्री युतद्विजाति वित्त श्री साहब डैरेक्टर आफ़
पब्लिक इन्स्ट्रक्शन् बहादुर के सर्रिश्तह में
पण्डित वंशीधर ने

संस्कृत भोज प्रबन्ध और उसके अनुयायी ग्रन्थों से सङ्ग्रह करके बनाया

उसको
अवध देशीय पाठशालाओं के विद्यार्थियोंके लियेनार्मल
स्कूल के थर्ड मास्टर पण्डित कालीचरण नेजहां तहां अशुद्धियां
बनाकर शुद्धकिया

स्थान लखनऊ

पांचवींवार

मुंशी नवलकिशोर के छापेखानेमें छपा
मार्च सन् १८८१ई०

भूमिका ॥

—o—

इस भरत खण्डमें बहुतेरे राजा बड़े २ प्रतापी और बलवान होगये प्रजाका पालन भी ख़ूब करते रहे पर उनमें से किसी नेभी प्रजाके पढ़ाने लिखाने की ओर कुछ दृष्टि न की हां थोड़ा बहुत राजाभोज ऐसाहुआ कि जिसने प्रजाका पालन और विद्या की वृद्धि भी अच्छीकी पर वह भी सब जगह अपने राज्यमें एक सी विद्या न फैला सका किन्तु केवल राजधानी उज्जैन नगर कोही भीतर पढ़ाने लिखाने का प्रचार बहुत करता रहा और सो भी इसप्रबन्ध के साथ कि मेरे नगरमें केवल पण्डित हो बसे, मूर्ख हो सो निकलजाय ऐसा करने से उस नगरमें बढ़ई, लुहार, तमोली आदिसबके सब पढ़े लिखे होगये इसके सिवाय उसने यहभीकिया कि गुणी मनुष्यों को जो उसके पास आते आदर सन्मान करके लाखों रुपये देता इतना ख़र्चने परभी ऐसा प्रबन्ध न कर सका कि नगर २ और गांव गांव में शाला * अर्थात् मकतब बैठा देताजैसे कि अब अंगरेज़ बहादुर ने लाखों रुपये ख़र्च कर ठौर २ बैठादीं और उनमें पाठक और अधिपाठक नियत करदिये हैं ऐसा प्रबन्ध तो भोज आदि राजाओं से होना बहुतही कठिन था तो भी भरत खण्ड के राजाओं में विशेष कर भोज बड़ा गुणग्राही हुआ जिसके समय के कालिदास बररुचि आदि कवियों की कविता अभी तक पढ़ने पढ़ाने में आती हैं अब इसलिये कि राजा और बादशाहों के अच्छे २ इतिहासों का हिन्दी वा उर्दू में उलथा करवा कर प्रचार करने मेंजो साहब डैरेक्टर आफ़पब्लिक इन्स्ट्रकशन बहादुर उद्यत हैं उनकी आज्ञानुसार पंडित वंशी-धर भोजप्रबन्धसार का और बीच २ में सामयिक श्लोक लिख कर उनका भी उलथा हिन्दी में करके नीचे लिखता है ॥

---

* शाला तो केवल मकान का नाम है पर अबके लोग पाठशाला को भी शाला बोलने लगे हैं ॥



भोजप्रबन्धसार

विक्रम के वंश में एक राजा सिन्धुल हुआ उसके बुढ़ापे में भोज एक लड़का पैदा हुआ वह पांचही वर्ष का था कि जब उसके बापने मरने के समय अपने मंत्री बुद्धिसागर को बुलवाया और कहा कि जो भोज को राजगद्दी देता हूं तो मेरा भाई मुञ्ज जो बलवान् है इस लड़के को इथा मार डालेगा और आप राज भोगेगा क्योंकि लालच बुरी वस्तु है—यथा,

लोभात्क्रोधःप्रभवति लोभाद्द्रोहःप्रवर्त्तते ॥
लोभान्मोहश्चभेदश्च मानोमत्सरएवच ॥ १ ॥

क्रोध और बैर मोह और तोड़ फोर अहङ्कार और ईर्षा ये सब लोभही से उपजते हैं लोभकी एक और भी बहुत बुरी प्रकृति है कि।

नार्थैःपूरयितुंशक्यो लोभो बहुविधैरपि ॥
नित्यङ्गम्भीरतोयाभि रापगाभिरिवार्णवः ॥ २ ॥

लालची मनुष्य का लालच बड़े लाभ से भी नहीं घटता जैसे कि समुद्र बड़ी२ नदियों के सङ्गम से भी कभी नहीं अघाता—तथा,

सुमहान्त्यपिशास्त्राणि धारयन्तोबहुश्रुताः ॥
छेत्तारःसंशयानाञ्च लोभग्रस्ताव्रजन्त्यधः ॥ ३ ॥

जो लोग शास्त्र और विद्याओं को अच्छी तरह जानते और कठिन सन्देहों का भेद खोलते हैं

वे भी लालच में आकर नीच काम कर बैठते हैं यहां तक कि ।

मातरम्पितरम्पुत्रम् भ्रातरञ्चगुरुन्तथा ॥
लोभाविष्टोनरोहन्ति स्वामिनम्वासुहृत्तमम् ॥ ४ ॥

मनुष्य लालचसे अपने मा बाप लड़के भाईगुरु मित्र और मालिक को भी मार डालता है ॥ ऐसी ऐसी बातें विचारकर राजा सिन्धुलने अपने भाई मुञ्ज को राजगद्दी दी और भोज को उसे सौंप कर शरीर छोड़ा मुञ्ज ने राजगद्दी पर बैठतेही पुराने मंत्री बुद्धिसागर को दूसरे अधिकार पर पलटा दूसरे को मंत्री का अधिकार दिया और भोजके पढ़ाने के लिये एक पाठशाला नियत की भोज व्याकरण न्याय इतिहास आदि चौदहविद्या और चौंसठ कलाओंको अच्छी तरह पढ़ विद्यामें बृहस्पतिकेतुल्य और विशेषकर कविताकी रचना में बहुत निपुण हुआ और नम्रता और गम्भीरता से अपने गुरु को भी बहुत प्रसन्न रखता रहा एक दिन भोजका चचा मुञ्ज पाठशालामें आया और भोजकी चतुराई और पण्डिताई देख अपने मनमें समझा कि यह तो अपने पिता से भी अधिक बलवान् और प्रतापी होता दीख पड़ता है सावधान होतेही अवश्य मुझसे राज छीन लेगा इसलिये अभी इसे मारना अच्छाहै और राजनीति में भी कहाहै कि मान अपमान को न देखै जिस तरह बने अपना काम निकाले—यथा,

अपमानम्पुरस्कृत्य मानंकृत्वातुपृष्ठतः ॥
स्वार्थंसमुद्धरेत् प्राज्ञः स्वार्थभ्रंशोहि मूर्खता ॥ ५ ॥

जो मनुष्य मान को छोड़ अपमान सहता और अपना काम निकालता है वही नीतिज्ञ और बुद्धिमान है जो इस नीति पर नहीं चलता पीछे पछिताता और मारा भी जाता है—यथा,

जातमात्रन्नयः शत्रुम् व्याधिञ्चप्रशमन्नयेत् ॥
अतिपुष्टाङ्गयुक्तोऽपि सपश्चात्तेन हन्यते ॥ ६ ॥

जो मनुष्य अपने वैरी और रोग को उपजते ही नहीं खो देता बलवान् होने पर पीछे उस वैरी या रोग से मारा भी जाता है॥

इस कारण भोज का अभी मारना अच्छा है यह विचार कर अपने मित्र वत्सराजसे बुलाकर कहा तुम मेरे परम मित्र और सदा सुख दुःखमें साथी रहे हो मेरा जो काम तुम कर सक्ते हो और कोई नहीं कर सक्ता इसलिये तुम्हें बुलाया है कि आज रात के समय भोजको वनमें लेजा-कर मार डालो और रातहीको उसकाशिरकाट कर मेरे पास लाओ यह सुनकर वत्सराज बहुत उदास हुआ और कहने लगा श्री महाराज भोज अभी लड़का है न उसके पास कुछ बल है न फ़ौज जिसका कि आपको डर हो और वह तो सब तरह आपके आधीन है फिर उसके मारने से क्या हाथ आवेगा इसी से विचार कर काम करना अच्छा होताहै क्योंकि बिना विचारे करने में पीछे पछ-ताना पड़ता और उपाधैंभी बहुत उठतीहैं—यथा,

सहसाविदधीत न क्रियामविवेकः परमापदाम्पदम् ॥
वृणतेहिविमृश्यकारिणं गुणलुब्धाःस्वयमेवसम्पदः ॥ ७ ॥

बिना बिचारे कभी कोई काम न करे क्योंकि

अविवेक केवल आपत्तियोंहीं का मूल होता है और सम्पत्ति गुणको बहुत चाहती है जो कोई विचार करता है उसको वह आपही स्वीकार करती है इससे भोजके मारने में बड़ा उपद्रव मचेगा क्योंकि उसको सब चाहते हैं वे फिर जायंगे तो आपका बचना और यहां रहना भी कठिन हो जायगा ऐसी बातैं वत्सराजकी सुनकर मुञ्जबहुत रिसाना और बोला तुम नौकरों की तरह बातैं करो मुझे मालूम होता है कि तुम भी भोज से मिले हो भला क्या हुआ उसके साथ तुमको भी मारूंगा यह सुनकर वत्सराज सर्द होगया और सोचने लगा कि क्या लगे है इस मूर्ख कायर से बन पड़े सोई थोड़ा है कहा भी है॥

किमकार्य्यं कुदर्य्यागान्दुस्त्यज न्किन्धृतात्मनाम्॥
किन्दुस्सहन्तु साधूनाम्विदुषाङ्किमपेक्षितम्॥ ८॥

कायर मनुष्य चाहे जैसा बुरा काम कर बैठे जितेन्द्रिय चाहे जिस विषय को छोड़दे और साधु चाहे जैसी दुःसह बातको सहले ऐसेही विद्वान् को किसी बातकी अपेक्षा नहीं होती॥ शिक्षा करने से मूर्ख उलटा जलता है — यथा,

उपदेशोहि मूर्खाणाम्प्रकोपायनशान्तये॥
पयःपानम्भुजङ्गाना ङ्केवलम्विषवर्द्धनम्॥ ९॥

मूर्खनरको उपदेश करने से वह उलटा जलेगा न कि शान्त हो जैसा कि सांपको दूध पिलानेसे कुछ भला नहीं होता केवल विषही बढ़ता है॥ ऐसा विचार कर वत्सराज ने कहा श्री महाराज यह बात मैंने बिना विचारे कहदी थी इस अपराध को

क्षमा कीजिये यह सुन मुञ्ज हंस उठा और कहने लगा मैंने तुम्हारा अपराध क्षमा किया पर मेरे कहने को जल्द कर लाओ ऐसी आज्ञा पाकर वत्स-राज ने सांझ को भोज के गुरु के पास जाकर कहा भगवन् भोज कुमार को शाला से बाहर लाओ यह सुन भोज का गुरु बड़ा दुखी हुआ वत्सराज ने कहा इसमें कुछ मेरा दोष नहीं राजा की आज्ञा है वैसा करता हूं दूतके द्वारा ऐसी बातोंको सुनकर भोज आंखें नीली पीली करता आपही वत्सराज के पास आ खड़ा हुआ और बोला कि अरे दुष्ट तू नौकर होकर मुझे शाला से क्यों बाहर बुलाता है इतना कह उसके एक खड़ाऊं मारी वत्सराज ने कहा मैं क्या करूं जैसी इच्छा राजा की हो वैसा किया चाहूं यह कहकर भोजको जोरावरी पकड़ रथ में बैठालिया और साथियों समेत नङ्गी तल-वारें खींचलीं इसतरह लेजाते जब भोजकुमार को नगरके लोगोंने देखा बड़ा घोरम चा पर किसी से ऐसा न बनपड़ा कि भोजको छुड़ाले निदान वत्स-राज ने भोज कुमार को बनमें लेजाकर कहा देखो आप के चचाने राज्यके लालच से आपके मारने के लिये आज्ञा दीहै इसलिये मैं आप को मारताहूं यह कहकर नङ्गी तलवार करली उस समय भोज ने यह श्लोक पढ़ा कि ॥

योमेगर्भगतस्यादौ वृत्तिङ्कल्पितवान्पयः ॥
शेषवृत्तिविधानेपुसोऽयंसुप्तो मृतोऽस्तिकिम् ॥ १० ॥

जिसईश्वरने गर्भ में मेरेलिये पहिलेहीसे दूध उपजाया था वह ईश्वर अबक्या शेष आवश्यकता

में रक्षा करने को सोगया वामरगया है अथवा॥

अघटितघटितङ्घटयति सुघटितघटितञ्जर्जरीकुरुते॥
विधिरेवतानिघटयति यानिनरोनैवचिन्तयति॥ ११॥

ईश्वर सर्वथा समर्थ है जो बात असम्भवित है उसेभी करता और जो सम्भवितहै उसे मेटता है उसने सबकेलिये पांचबातें नियतकरदीहैं—यथा,

पञ्चैतानीहसृज्यन्ते गर्भस्थस्यैवदेहिनः॥
आयुःकर्मचवित्तञ्च विद्यानिधनमेवच॥ १२॥

जिस समय मनुष्य गर्भमें आताहै उसकेलिये पांचबातें नियत करदीजातीहैं एकउमर दूसरा कर्म्म तीसरा धन सम्पत्ति चौथी विद्या पांचवां मरना॥ इसीसेईश्वरने जिसके लिये जैसा रचाहै वैसा अवश्य होताहै कुछतुम्हारा दोष नहीं परवशहो॥ सेवकों का धर्म भी यहीहै कि मालिक और बड़ोंकी आज्ञा पूरीकरनी, देखो परशुराम जीने पिताकी आज्ञासे अपनी माताको भीमारा और लक्ष्मणने भाई श्री रामचन्द्रजीकी आज्ञासे सीता का परित्याग बनमें किया इससे हमारे बचानेको कहाहै उसेपूराकरो परइतना कहना मेराभी करना कि एक पत्रमैं अभी लिखे देता हूं सचा साहबको दे देना वत्सराजने कहा बहुत अच्छा आप पत्रलिखियेमैंदेदूंगा भोजने झट पट पत्रलिखकर वत्सराज को दिया और कहासब उसको देख वत्सराज ने बड़ा अचम्भा मान कर यह श्लोक पढ़ा॥

उद्यमंसाहसन्धैर्य्यं म्बलम्बुद्धिःपराक्रमः॥
षड़ेतेयस्यविद्यन्ते तस्माद्दैवोऽपिशङ्कते॥ १३॥

उपाय और साहस धीरज और बल बुद्धि और पराक्रम ये छः जिसमें दृढ़ होते हैं उस मनुष्यसे ईश्वरभी शङ्का करता है ॥

और कहा हेराजकुमार । इसधीरजको देख मेरा हाथ आपके ऊपर नहीं उठता यह कहतेही आंखों से आंसू बहने लगे तलवार हाथसे छूटपड़ी और यह श्लोक स्मरण आया ॥

एकएवसुहृद्धर्म्मो निधनेप्यनुयातियः ॥
शरीरेणसमन्नाशं सर्व्वमन्यद्धिगच्छति ॥ १४ ॥

मरे पर एक धर्म्महीं साथ चलता है और सारी बातें शरीरहीके साथ नाश होजाती हैं ॥ फिर मैं क्यों इस अनित्य देहसे हत्यालूं ॥

अनित्यानिशरीराणि विभवोनैवशाश्वतः ॥
नित्यन्सन्निहितोमृत्युः कर्त्तव्योधर्म्मसंग्रहः ॥ १५ ॥

शरीर और सम्पत्तियां तो अनित्य हैं और मौत सदा घेरे है इससे उत्तम यह है कि सब छोड़ केवल धर्म्म करना चाहिये ॥

वत्सराज यह विचारकर भोजके पैरों में गिर पड़ा और कहने लगा धिक्कार मुझेहै जो आपके चचाके कहनेमें आकर ऐसा कामकरनेको उतारू हुआ भोजभी इसदया और प्रीतिको देख वत्सराजके गलेमें लिपटगया और बोला कुछ इसका सोच मत करो इसके अनन्तर वत्सराज भोजको रथमें बैठा अपने घर लेगया और छिपाकर रक्खा देखो ईश्वर कैसा रक्षक है ॥

अरक्षितन्तिष्ठतिदैवरक्षितंसुरक्षितन्दैवहतम्विनश्यति ॥
जीवत्यनाथोऽपिवनेविसर्ज्जितःकृतप्रयत्नोपिगृहेनजीवति ॥ १६ ॥

दैवजिसकी रक्षा करता है उसे बनमें छोड़दो वहां भी बचाता है और जिसे मारता है घरमें कितनाही रक्षासे रक्खो वह मरही जाता है॥ इसके अनन्तर मुञ्जके डरसे वत्सराज मनुष्य का कृत्रिम शिर बनवाकर राजाके पासलाया, और बोलाओमहाराज। कामकरआया यह सुनतेही राजानेप्रसन्न होकर वत्सराजको पास बैठालिया और भोजका कृत्रिमशिरदेख इसकेआगेबहुतसा रोदन कर पूछा कि मारनेके समय भोज ने कुछ मुझे भी कहा था। वत्सराज ने भोजका लिखा हुआ पत्र देदिया राजा उसले और उसकृत्रिम शिरको एकान्तमें गाड़नेका हुक्म दे सभासे उठ कर राजमहलोंमें गया वहां उस पत्रको खोला तो दो श्लोक लिखेदेखे उनमें पहिला यह था॥

मान्धातासुमहीपतिः कृतयुगेऽलङ्कारभूतोगतः॥
सेतुर्येनमहोदधौविरचितः क्वासौदशास्यान्तकः॥
अन्येचापियुधिष्ठिरप्रभृतयो यातादिवंभूपते॥
नैकेनापिसमङ्गता वसुमती मन्येत्वयायास्यति॥ १७॥

सत्ययुग में भूमिका भूषण बड़ा प्रतापी राजा मान्धाता त्रेतामें रामचन्द्र जिन्होंने समुद्रमें पुल बांधा और रावणको मारा तथाद्वापरमें युधिष्ठिर इत्यादि बहुत बड़े२ राजा होगये और मर भी गये कहो अब वे कहां हैं। उन में से किसी के साथ यह पृथ्वी न गई पर मैं जानताहूं अब तेरे साथ जायगी दूसरा यह था—

यौवनन्धनसम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकता।
एकैकमप्यनर्थाय किमुयत्रचतुष्टयम्॥ १८॥

जवानी धन सम्पत्ति प्रभुता और अविवेकता इन चारों में से एक भी हो वहां अनर्थ होता है और जहां चारों हैं वहां का क्या ठीक है ॥ इन श्लोकों को बांचकर राजा बहुत पछताया और सोचा कि हाय मैंने क्या किया बिना अपराध भोज को मारा इस पापसे क्या जाने मेरी क्यागति हो सुझेलोग क्याकहेंगे इतना कह मूर्छित होधरती पर गिरपड़ा कुछ देर में सचेत हुआ तो तलवार ले अपने ही मारने लगा इसबातको देख सब मंत्री आदि घबरागये उसे समझाने लगे पर वह तनक भी न समझा मरनेहीं पर उतारू हुआ कहने लगा मैंने अपना और अपने भाई दोनों का कुल नाशकिया भोज बड़ा सपूत लड़का था उसके रहने से कुलकी बड़ी शोभा थी क्योंकि—

एकेनापिसुपुत्रेण पवित्रगुणशालिना ।
सुरभिःक्रियतेगोत्र ञ्चन्दनेनैवकाननम् ॥ १९ ॥

सपूत गुणवान् और अच्छे आचरणवान् एकही लड़केसे सारा कुल शोभित और प्रख्यातहो जाता है जैसे कि चन्दन के एकही पेड़ से बन का बन सुगन्धित हो उठता है ॥ सपूत एक भी अच्छा कपूत दश भी निरर्थक क्योंकि--

एकेनैवसुपुत्रेण सिंहीस्वपितिनिर्भया ।
सहैवदशभिःपुत्रै र्भारम्वहतिगर्दभी ॥ २० ॥

सिंहनी एकही बच्चे के होने से बन में निडर होकर सोतीहै और गधी बिचारी दश बच्चों के होने में भी लादी जाती है ॥

राजा के इस पश्चात्तापको देख वत्सराजने हाथ

जोड़कर कहा मैं आपकी कोमल दयालु प्रकृति को खूब जानता था कि पीछे आप भोजके दुःख से अपना भी जी खोवेंगे इससे आपके कहने परभी मैंने भोजको नहीं मारा कृत्रिम शिरलाकरदिखा दियाहै इतना सुनतेही राजा हरा भरा होगया और वत्सराज को छाती से लगाकर कहने लगा भोजको जल्द लाओ उसी समयवत्सराजभोजको हाथी पर सवार करवाकर लोगों के चित्तों को हुलसाता हुआ मुञ्ज की सभा में ले आया भोज कुमारको देखतेही फूट २ कर रोतेहुये राजा ने अपना अपराध सबको कह सुनाया और भोज से बड़ा लाड़ प्यार करके कहा बेटा अपनी राज गद्दी को संभाल लो और मुझे ईश्वर का स्मरण करने दो यह कहकर भोजको राजगद्दी दी और आप रानी समेत बनको तप करने के लिये चला गया देखो ईश्वर कैसा प्रेरक है कहां मुञ्जराज्य के लिये भोज को मारता था कहां आपही राज छोड़ बनको चला गया—

मारितोराज्यलोभेन पितृव्येनबनान्तरे ॥
दैवेनरक्षितस्ताच भाग्येनापिस्वकन्धनम् ॥ २१ ॥

चचाने राज्यके लालचसे भोजको मारनेके लिये बनमें भेजा पर वहां ईश्वर ने रक्षा की और भाग्यसे अपना धन और राज्य मिला ॥ इससे निश्चय होताहै कि ईश्वर ने जिसके लिये जो २ बातें नियत की हैं कभी मिटती नहीं यथा—

उदयतियदिभानुः पश्चिमेदिग्विभागे ॥
प्रचलतियदिमेरुः शीततांयातिबन्हिः ॥ २२ ॥

विकसतियदिपद्म म्पर्वताग्रेशिलाया ॥
न्नहिचलतिनरायास्माविनीकर्म्मरेखा ॥ २३ ॥

सूर्य्य जो सदा पूर्व्व में उदय होता है चाहे पश्चिम में उदय हो, पहाड़ कभी चलता नहींवह भी चल उठे और आग कभी ठंढी नहीं होती वह भी किसी तरह ठंढी होजावे इसी प्रकार कमल भी जो पानी में जमता है पहाड़ में जम उठे परन्तु ईश्वरने मनुष्य के माथे पर जो लिखा है कभी मिटने का नहीं ॥

भोजने गद्दीपर बैठतेही पहलेदिन अपनेपिता के पुराने मंत्री बुद्धिसागर को मंत्रीका अधिकार दिया दूसरे दिन बुद्धिसागरकी अनुमति से वत्स-राजकोकई गांव और बहुत सा धनदेकर कहा कि थोड़े दिनों को अपने देश हो आओ क्योंकि तुमको देश छोड़े बहुत दिन हुयेहैं ऐसे वत्सराज कोबिदा किया अनन्तर सब ओहदेदारोंकोबुला कारहरएककोयथोचित खिलअतेंदीं औरअपने२ कामों का हाल पूछा तीसरे दिन घोड़े हाथी रथफ़ौज और खज़ानेकोदेखा और सबकामदारों का आदरसम्मान हंसने बोलने और पासबैठाने के द्वारा जैसा उचित था किया उसदिनके चौथे पहर में भोज को गुरु ने राजनीति सिखाई ॥

राजनीति ॥

विपदिधैर्य्यमथाभ्युदयेक्षमासदसिवाक्पटुतायुधिविक्रमः ॥
यशसिचाभिरुचिर्व्यसनंश्रुतौप्रकृतिसिद्धमिदंहिमहात्मनाम् ॥ २३ ॥

अच्छे मनुष्य विपत्ति में धीरज धरते बढ़तीमें शांत रहते सभा में प्रगल्भता दिखाते संग्राम में

सिंह बनजाते कीर्त्ति में सदा रुचि रखते और विद्या में व्यसन करते हैं ऐसी बातें उन में स्वाभाविक पाई जाती हैं॥ सबको उत्तम मनुष्यों की तरह काम करनाचाहिये क्योंकि—

प्रारभ्यतेविघ्नभयान्ननीचैः प्रारभ्यविघ्नविहिताविरमन्तिमध्याः॥
विघ्नैस्सहस्रगुणितैरपिहन्यमानाःप्रारब्धमुत्तमगुणानपरित्यजन्ति २४

मनुष्य तीनतरहके होतेहैं उत्तम मध्यम और निकृष्ट उनमें से निकृष्ट मनुष्य विघ्नके डरसे पहलेही से किसी कामको नहीं करते और मध्यम मनुष्य काम का प्रारम्भ तो करदेते हैं पर विघ्न होनेपर उसको छोड़देते हैं परन्तु उत्तम नरजिस कामको छोड़ते हैं पूरा करकेही छोड़तेहैं चाहो जैसा विघ्न उनपर क्यों न आन पड़ो॥ राजाको प्रतापी और बलवान् भी होनाअवश्य है क्योंकि वैसेही राजाओं के सब काम पूरे होते तिसमें भी तेज मुख्य है यथा—

हस्तीस्थूलतरः सचांकुशवशः किंहस्तिमाचांकुशो॥
बज्रेणाभिहतः पतेदिहगिरिः किम्बज्र माचोगिरिः॥
दीपेप्रज्वलिते प्रणश्यतितमः किन्दीपमाचन्तमः॥
तेजोयस्य बिराजतेसबलवान् स्थूलेषुकःप्रत्ययः॥ २५॥

प्रताप सबसे बड़ा बल है क्योंकि हाथी बड़ा मोटा ताजा होता है पर छोटेसे हाथ भरके अंकुश के बस में आ जाता है क्या अंकुश हाथी के समान है पहाड़ कैसाही भारी होता है पर बिजली से फट जाता है क्या बिजली भी पहाड़सी है और दीवेके सामने सब अंधेरा नष्ट होजाता है कहो दीवेकी क्या बुनियाद है इसीसे सब से

बड़ा बलमतापही गिना जाताहै राजाको गुणी होना भी उचित है क्योंकि निर्गुणी होनेसे उसके साथ औरोंके गुणभी दोष हो जाते हैं यथा

गुणा गुणज्ञेषुगुणाभवन्ति तेनिर्गुणम्प्राप्य भवन्तिदोषाः ॥
सुस्वादुतोयाःप्रभवन्तिनद्यः स्समुद्रमासाद्यभवन्त्यपेयाः २६

गुणीके पास जाकर गुणीका गुण दूना और मूर्खके पास जाकर वही दोष होजाता है जैसे नदियोंका मीठाभी पानी समुद्रमें जाकर खारी होजाता है गुणीके पास बहुधा गुणी मनुष्य बहुत आते हैं यथा॥

गुणिनिगुणज्ञो रमतेनागुणशीलस्य गुणिनिपरितोषः ॥
अलिरेति वनात्पद्मन्नदर्दुरस्त्वेकवासोऽपि ॥ २० ॥

गुणी गुणीकेही पास जाताहै देखो भौंरा वन में रहता है तबभी वहां पानीके बीच कमल के पास पहुंचता है और मेंड़क वहीं जलमें रहता है पर इतनाभी नहीं जानता कि कमल कैसाहै और न एक बार भी उसके पास जाता है॥ राजा का धर्म्मवान् होना भी योग्य है-यथा

राज्ञिधर्म्मणि धर्मिष्ठः पापेपापाः समेसमाः ॥
प्रजास्तदनु वर्त्तन्ते यथाराजा तथाप्रजाः ॥ २८ ॥

जैसे राजा होता है वैसेही उसकी प्रजा भी होजाती है यदि राजा धर्म्मात्मा हुआ तोप्रजा भी धर्म्मवान्, पापी हुआ तो पापी और सम हुआ तो सम-तथा

यद्यदाऽचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरोजनाः ॥
सयत् प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनु वर्त्तते ॥ २९ ॥

जैसा आचरण श्रेष्ठ मनुष्य करता है वैसाही

और लोगभी करने लगते हैं और जिस बातका वह प्रमाण करता है उसीके अनुसार वर्त्तते हैं॥ किसी अच्छे मनुष्य की रक्षा करो तो वह समय पाकर अवश्य उपकारी होता है--यथा

यथा बीजांकुर स्सूक्ष्मः प्रयत्नेनाभि पालितः॥
फलप्रदो भवेत्काले तद्वल्लोक स्सुरक्षितः॥ ३०॥

रक्षा किया हुआ वैसही अच्छा मनुष्य समय में बड़ा काम निकालता है जैसे बीजका तनकासा अंकुआ पाला हुआ समयमें कैसा फल देताहै॥ ये बातें कहकर गुरु बोले भो राजन् मुझे निश्चय है कि आपज्ञानवान् हो पर इस जगतमें आकर सब मतवाले होजाते हैं इस लिये भिक्षा करता हूं कि आप राज्यासक्त न हों॥

आदित्यस्य गतागतैरहरहः संक्षीयतेजीवितम्॥
व्यापारैर्बहु कार्य्यभारगुरुभिः कालोऽपिनज्ञायते॥
दृष्ट्वाजन्मजरा विपत्तिमरणं चासश्चनोत्पद्यते॥
पीत्वामोहमयींप्रमाद मदिरामुन्मत्त भूतञ्जगत्॥ ३१॥

अज्ञान रूपी मदिरा पीकर जगत् में सब कैसे मतवाले हो रहे हैं कि सूर्य्यके उदय अस्त होने से दिन २ अवस्था घटती जाती है घर बाहर के बड़े २ भारी काम काजों में लगे रहने से समय भी तेर होतेनहीं जाना जाता प्रतिदिन जीना मरना दुख सुख बुढ़ापे आदिको देखकरभी नहीं डरते और अज्ञानी होकर धर्मकी ओर कोईभी नहीं लगते॥ दो प्रकार के मनुष्य होते हैं एक दुर्जन दूसरे सज्जन दुर्जन मनुष्य सुखी भी हों उनकी संगति में बिगाड़ही होताहै--यथा

दुर्ज्जनःपरिहर्त्तव्यो विद्ययालंकृतोऽपिसः ॥
मणिनाभूषितस्सर्पः किमसौन भयंकरः ॥ ३२ ॥

दुर्ज्जन चाहे विद्यावान् भी हो पर उसका त्याग करना ही उचित है क्योंकि जिस सांप के पास मणि होती है वह क्या काटता नहीं ? दुर्ज्जन,सांपसे भी बरा होता है यथा ॥

सर्पःक्रूरः खलःक्रूरः सर्पात् क्रूरतरः खलः ॥
सर्पेएकाकिनंहन्ति खलस्सर्व्वं विनाशकृत् ॥ ३३ ॥

खल और सांप दोनों हीक्रूर होते हैं बरन दुर्ज्जन सांपसे भी बुराहै क्योंकि सांप तो एकही के। काटकर मारता है और यह सारे राज को बिनाशता है ॥ दुर्ज्जन अपने दोषकी ओर नहीं देखता पराये ही के। निहारता है--यथा

खलस्सर्षपमात्राणि परच्छिद्राणि पश्यति ॥
आत्मनो बिल्वमात्राणि पश्यन्नपि नपश्यति ॥ ३४ ॥

दुर्ज्जन मनुष्य सरसों के तुल्यभी दूसरे के खोट को सदा खोलना चाहता है और अपने बेल के समान अर्थात् बड़े २ को भी जो छिद्र नहीं सका अपने वश भर जानकर भी ढांपता है ॥

इस लिये इसको छोड़ सज्जनों की संगति करनी उचित है क्योंकि—

एतदर्थंकुली नानान्नराः कुर्वन्ति संग्रहम् ॥
आदिमध्यावसानेषु नतेयान्तिहि विक्रियाम् ॥ ३५ ॥

कुलीन सज्जनों की संगति और संग्रह इसलिये करते हैं कि वे आदि मध्य और अन्त में सदा एकसे रहते हैं कभी बिगाड नहीं करते ॥ बरन उनकी बात या मनमें कभी अन्तरकी राध

भी नहीं आती और वे थोड़ेही उपकार करने पर बड़ा हित मानते हैं--यथा,

सन्तस्तृणोत्तारणमुत्तमांगात्सुवर्णकोट्यर्प्पणमामनन्ति ॥
प्राणव्ययेनाऽपिकृतोपकाराः खलाःपरम्वैरमिवोद्वहन्ति ३६

सिरसे तिनका उतारनेमें सज्जन मनुष्य इतना निहोरा मानता है कि मानों करोड़ो असरफी पाई पर दुर्ज्जन के साथ इतना उपकार करो कि जीभी खोदो तोभी वह उसे वैरके समान जानता है ॥ तथा सज्जन मनुष्यकी मैत्रीतो सदा बढ़ती और दुर्ज्जनकी घटती जातीहै--यथा

आरम्भगुर्वीक्षयिणीक्रमेण लघ्वीपुरावृद्धिमतीचपश्चात् ॥
दिनस्यपूर्व्वार्द्धपरार्द्धभिन्नाछायेवमैत्रीखलसज्जनानाम्३७

दुर्ज्जन मनुष्य की मैत्री पहिले तो बहुत होती फिर क्रम २ घटती और सज्जनकी प्रीति पहिले तो कमहोती फिर बढ़ती जातीहै जैसे कि दिन के पूर्वार्द्धकी छाया पहिले बहुत होकर दो पहर तक घटती और परार्द्धकी छाया पहिले लाघुहोकर साँझ तक बढ़ती जाती है ॥ राजा को उचित है कि प्रजाको धर्म्ममें लगावे और अधर्म्मीहों उन्हें आवश्यक दण्ड देकर सीधा करे क्योंकि बिना दण्डके प्रजा का शासन नहीं हो सक्ता--यथा

नहिदण्डादृतेशक्यः कर्त्तुम्पापविनिग्रहः
स्तेनानाम्पापबुद्धीनां निभृतञ्चरतांचितो ॥ ३८ ॥

पापबुद्धि और ऊपरसे देखनेको साधु वेषधारी अधर्म्मी तथा चोरोंको जोसब प्रजाको दुःख देते और राज प्रबन्धको बिगाड़ते हैं शासन करनेको

लिये दण्डके सिवाय और कोई उपाय पृथ्वीमेंनहीं परन्तु दण्ड चार प्रकार का होताहै उसका प्र-योग यथोक्त प्रकार से करना चाहिये--यथा ॥

वाग्दण्डंप्रथमंकुर्य्यात् धिक्दण्डन्तदनन्तरम् ॥
तृतीयन्धनदण्डन्तु वधदण्डमतःपरम् ॥ ३९ ॥

पहिला दण्डबाणी बारके समझाना चिताना या ऊंची नीची सुझाना, दूसरा बुराकहना या लानत देना, तीसरा धनछीनलेना अर्थात् जुर्माना करना और चौथा मारना या मार डालना है इनमें से पहिलेसे शासन नहो दूसरेको करे दूसरे से नहो तीसरेको करे और जब किसी प्रकारसे भी शान्तिहोती न दीखेतो अन्तमें चौथादण्ड देवे॥ पर यह सब यथोचित न्यायके साथही करे नहीं तो प्रजाके नष्टहोजानेकी शंकारहती है ।किञ्च ॥

सिंहरूपेणराजानो व्याघ्ररूपेणमंत्रिणः ॥
भृत्याश्च गृध्ररूपेण नयंयास्यन्तिवैप्रजाः ॥ ४० ॥

राजा आप सिंहरूपऊआ तोउसके मंत्री बाघ तथा और नौकर चाकर गीधोंके तुल्य अवश्यहो जावेंगे इसीसे प्रजाजो अन्यनिर्बल जीवोंके तुल्य है नष्टहो जावेगी और राजा धर्मवान् ऊआतो सब अपनी २ मर्य्यादाही में चलेंगे नहींतो उसके परिकरके लोग प्रजाको तहस नहस करही देवें-गे इसमें कुछ सन्देह नहीं ॥ राजाको राज के विषयमें तो सन्तोषी होना अनुचित है यथा ॥

तृप्तियोगःपरेणाऽपि नामहिम्नामहीयसाम् ॥
पूर्णचन्द्रोदयाकांक्षी दृष्टान्तोऽत्रमहार्णवः ॥ ४१॥

बड़े प्रतापी मनुष्य अधिक सम्पत्ति के पाने से

भी नहीं अघाते जैसेकि समुद्र सब तरह से भरा है पर तब भी बढ़ने के लिये पूर्ण चन्द्रमा की आकांक्षा सदा रखताही है॥

सन्तोष करने से ईश्वर भी उसकी ओर से निश्चिन्त हो जाता है---यथा॥

सम्पदस्सुस्थिरम्मन्ये भवतिस्वल्पयाऽपियः॥
कृतकृत्योविधिर्म्मन्ये नवर्द्धयतितस्यताम्॥ ४२॥

जोमनुष्य थोड़ीसीही सम्पत्ति पाकर सन्तोषी हो जाता है उसकी ओर से मैं जानता हूं कि कृतकृत्य होकर ईश्वर भी उसकी सम्पत्ति को नहीं बढ़ाता॥ तथा बिना शत्रु के मारे उदय भी किसीका नहीं होता--यथा॥

समूलघातमघ्नन्तः परान्नोद्यन्तिमानिनः॥
प्रध्वंसितान्धतमसस्तत्रोदाहरणंरवेः॥ ४३॥

जब तक मनुष्य अपने सारे बैरियों को मार नहीं लेता उसका विभव नहीं बढ़ता जैसे कि सूर्य सारे अन्धेरे के बिल्कुल नाश करे बिना अच्छी तरह उदय नहीं होता॥

शत्रुओंके बिना नाशकिये राजाको प्रतिष्ठा भी नहीं मिलती—यथा

विपक्षमखिलीकृत्य प्रतिष्ठाखलुदुर्ल्लभा॥
अनीत्वापङ्कतान्धूलि मुदकन्नावतिष्ठति॥ ४४॥

बैरियों को बिना मूलोच्छेद किये मनुष्य की प्रतिष्ठा होनी बहुत दुर्लभ है जैसे पानी जब तक धूलिको कीच नहीं करलेता ठहर नहीं सक्ता॥

वैरीसे वैरकर के उदासीन होना न चाहिये क्योंकि—

विधायवैरंसामर्षे नरोऽरौयछदासते ॥
प्रक्षिप्योदर्चिषङ्कक्षे शेरतेतेऽभिमारुतम् ॥ ४५ ॥

जो अभिमानी मनुष्य कुनहीं बैरीसे बैर बढ़ा कर उदासीन हो रहता है वह मानों तिनकों के पूलों में जलती ऊई आग लगाकर उसकी बायु के सामने सो रहता है ॥

बैरी को बशमें लानेके लिये छः उपाय हैं यथा सन्धि वो मिलाप १ विग्रह वा लड़ाई २ यान वा बैरीके ऊपर चढ़ जाना ३ आसन्न वा चुपके हो रहना ४ द्वैधीभाव अर्थात् एकबैरी के साथ मिल कर दूसरे बैरीको मारना ५ आश्रय वा बैरी के बश में होरहना ६ ॥ जहांतक बने मिलापसे काम निकाले अपनी सामर्थ्य देखे तो लड़े उसे अपने से अधिक बलवान् देखे तो चुप होरहै इसी प्रकार जानो और सब तरह अपने को बलवान् या बैरी को निर्व्वल देखे तो उस पर चढ़े—यथा

स्वशक्तयुपचयेकेचित्परस्यव्यसनेपरे ॥
यानमाहुर्नचान्यैस्तु गुणैःकार्य्यंविचिन्तनम् ॥ ४६ ॥

कोई कहते हैं अपनेको बलवान् देखे तो बैरी पर चढ़े कोई कहतेहैं बैरीको निर्व्वल पावे तब चढ़ाई करे परन्तु इन दोनों में से एक भी न हो तो और २ उपायों से काम काढ़े ॥ राजा को उचित है कि सदा अच्छी सङ्गति में बैठे क्योंकि जैसी सङ्गति होती है वैसाही उसका गुण—यथा

सन्तप्तायसिसंस्थितस्यपयसो नामापिनश्रूयते ॥
मुक्ताकारतयातदेवनलिनी पत्रस्थितंराजते ॥
स्वात्यासागरशुक्तिमध्यपतितन्तम्मौक्तिकञ्जायते ।

प्रायेणाऽधममध्यमोत्तमगुणास्संसर्गतोभूयते ॥ ४७ ॥

जलकी बूंद तत्तेलोहेपर पड़ती है तो उसका चिन्ह भी नहीं रहता वही बूंद कमलके पत्ते में पड़कर मोतीसी दीखपड़ती है और स्वातिके योगमें सीपी में पड़कर वही मोती होजाती है इसी तरह जैसी सङ्गति वैसाही उसका गुण होता है ॥ जगत् में सब अपने २ स्वार्थ के साथी हैं—यथा

वृक्षंक्षीणफलंत्यजन्तिविहगादग्धम्बनान्तम्मृगाः ॥
पुष्पम्पीतरसंत्यजन्ति मधुपाश्शुष्कंसरस्सारसाः ॥
निर्द्रव्यंपुरुषंत्यजन्तिगणिकाभ्रष्टंनृपम्मंत्रिणः ॥
सर्व्वःकार्यवशाज्जनोऽभिरमते कःकस्यनोवल्लभः ॥ ४८ ॥

पखेरू पेड़ को फलके न रहने से हरिण वनको जल जाने से, भौंरे फलको नीरस होजाने से, वेश्या पुरुष को दरिद्री होजाने से, और मंत्री आदि राजा को राजसे रहित होने से छोड़ देते हैं ॥ इससे यह बात निकलती है कि संसार में सब अपने२ स्वार्थ के साथी होते हैं ॥ इसीसे राजा को साधारण वृत्ति से रहना उचित है अर्थात् न किसी से बहुत प्रीति रखनी चाहिये न किसी से बैर ॥ राजा जो माली की तरह अपने काम में लगा रहता है बहुत समय तक राज्य करता है—यथा

उत्खातान्प्रतिरोपयन्कुसुमितांश्चिन्वंल्लघून्बर्द्धयन् ॥
कुब्जान्कण्टकिनोबहिर्निर्गमयन्बिश्लेषयन्संहतान् ॥
अत्युच्चान्नमयन्नतान्समुदयन्नुन्नामयन्भूतले ॥
मालाकारइवप्रयोगनिपुणोराजाचिरंजीवति ॥ ४९ ॥

माली बाग में उखड़े पेड़ों को लगाता फले-

क्षों को सींचता छोटों को बढ़ाता कटीले और कुबड़ों को बाहर निकालता सघनों को छांटता उन्नतों को लचाता और लचेक्षों को उठाता है राजा जो इसी रीति से अपने राज काज का प्रबन्ध करता है बहुत समय तक राज्यकरता है ॥

मनुष्य को किसी २ काम में अपने को अमर और अजर तथा किसी में आसन्न मृत्यु गिनना चाहिये — यथा

अजरामरवत्प्राज्ञोविद्यामर्थञ्चचिन्तयेत् ॥
गृहीतइवकेशेषुमृत्युनाधर्म्ममाचरेत् ॥ ५० ॥

बुद्धिमान्को चाहिये कि बूढ़ा न हूंगा न मरूंगा ऐसा समझ विद्या और धनको जोड़े और मौतने दबा लिया ऐसा मानकर धर्म्म करे ॥ सब को वशरूपी बन्धन में लानेके लिये स्नेह बड़ी रस्सी है—यथा

बन्धनान्यपिभवन्तिबहूनिप्रेमरज्जुकृतबन्धनमन्यत् ॥
दारुभेदनिपुणोऽपिषडंघ्रिर्निष्क्रियोभवतिपङ्कजबद्धः ॥ ५१ ॥

बांधनेके लिये बहुत वस्तुहैं परन्तु उनको तोड़ कर सब को छूटना चाहता, छुट जाता है पर प्रीतिरूपी रस्सी ऐसीहै कि उसे कोई नहीं तोड़ सक्ता देखो भौंरा लकड़ी को काट डालता है पर कमल में जाकर रुकता है स्नेह से बन्धन में रहना तो स्वीकार करता है पर उसे काट नहीं सक्ता ॥ विद्या का पढ़ना सबको उचित है क्योंकि—

विद्यानाममनरस्यकीर्तिरतुलाप्रच्छन्नमन्तर्धनम् ॥
विद्याभोगकरीपुनर्यशस्करीविद्यागुरूणांगुरुः ॥

6517.

बिद्याबन्धुजनोबिदेशगमनेबिद्यापरन्देवतम् ।
बिद्याराजसुपूजिताशुभधनम्बिद्याविहीनःपशुः ॥ ५२ ॥

बिद्या मनुष्य को अतुल कीर्त्ति का हेतु और छिपाहुआ धन है बिद्या सुखको देती और दूसरे मनुष्योंको बशमें लाती है बिद्या सबसे उत्तमगिनी जाती बिदेशमें निर्बाह करती और राजाओंमें मान कराती है इसीसे लोग जो बिद्या रहित हैं चौपायों के तुल्य हैं ॥ इसकारण राजा को उचितहै कि आप बिद्या में लगारहै और प्रजा को भी पढ़ाकर दोषों से रहित करे येबातें सब को बिचारनी उचित हैं किम्बा—

ऐश्वर्य्यस्यविभूषणंसुजनताशौर्य्यस्यबाक्संयमो ॥
ज्ञानस्योपशमः श्रुतस्य बिनयोबित्तस्य पात्रेव्ययः ॥
अक्रोधस्तपसः क्षमाप्रभवितुर्धर्म्मस्य निर्व्याजता ॥
सर्वेषामपिसर्व्वकारणमिदंशीलम्परंभूषणम् ॥ ५३ ॥

बिभव का भूषण सुजनता, शूरता का गप्प न मारना, ज्ञानका शान्ति, बिद्याका नम्रता, धनका पात्र में देना, तपका शान्ति; धर्म्म का निष्कपट होना पर शील सबका भूषण है ॥

राजा को उचित है कि न बहुत किसी से परिचय रक्खे न बहुत किसी से स्नेह क्योंकि—

अतिपरिचयादवज्ञा सततङ्गमनान्निरादरोभवति ॥
मलयेभिल्लपुरन्ध्रीचन्दनतरुमिन्धनङ्कुरुते ॥ ५४ ॥

बहुत परिचय होने में आदर घटता और बार २ किसी के पास जाने में निरादर होता है देखो चन्दन की लकड़ी सबको प्यारी है परन्तु मलयागिरि पहाड़ पै अधिक होने से भिल्लों की

स्त्रियां उसी को ईंधन बनाती हैं ॥ ऐसा मनुष्य राजा कहाता है—यथा

बुद्धिशस्त्रःप्रकृत्यङ्गो घनसम्बृतिकंचुकः ॥
चारेक्षणोदूतमुखः पुरुषःकोऽपिपार्थिव ॥ ५५ ॥

जिसके बुद्धि हथियार हो मंत्री मित्र खजाना देश गढ़ और सेना शरीर हो तथा मंत्र गोपन, बखतर, मुखबिर आंखें और दूत मुख हो वह राजा कहाता है ॥ राजा को सदा उद्योगी रहना उचित है—क्योंकि

उद्योगिनम्पुरुष सिंहमुपैतिलक्ष्मीः ॥
दैवेनदेयमितिकापुरुषावदन्ति ॥
दैवम्बिलंघयकुरु पौरुषमात्मशक्त्या ॥
यत्नेकृतेयदिनसिध्यतिकोऽत्रदोषः ॥ ५६ ॥

उपायी श्रेष्ठ मनुष्य कामके सिद्ध होने में उपाय कोही मुख्य समझते और भाग्य को तुच्छ गिन पौरुष कर काम सिद्ध करतेहैं इसीसे उनके पास लक्ष्मी आती है कदाचित् उपाय करने पर भी काम सिद्ध न हो तो उन्हें कोई दोष नहीं देसक्ता परन्तु भाग्य का दिया मिलेगा ऐसी बात कूर निमुहे मनुष्य कहते हैं ॥ किसी २ मनुष्य में गुण होकर भी वृथाही रहता है—यथा

अप्रगल्भस्ययाविद्या कृपणस्यचयद्धनम् ॥
यच्चबाहुबलंभीरो व्यर्थमेतत्त्रयंभुवि ॥ ५७ ॥

अल्पभाषी, झिझकने वाले मनुष्य की विद्या, सूमका धन, और डरपोकने का बाहुबल, तीनों गुण वृथा हैं क्योंकि बिना कहनेके विद्या मालूम

नहीं होती धन बिना बरतने के स्वार्थ नहीं लगता इसी प्रकार बलको भी जानों ॥

आपने तो उशना और चाणक्यकी राजनीति सम्पूर्णही पढ़ी है पर इस समय मुझकोभी कुछ नीति कहनी आपके आगे उचित थी इसलिये ये श्लोक पढ़ने में आये और महाराज आपतो राजा सिन्धुल के जो नीति में शिरोमणि थे पुत्र हो॥ यह सुन भोजने फणीन्द्रगुरूको दोगांव और बहुतसा धन देकर व्यवस्था देने और न्याय करने का अधिकार दिया इतने में चोपदार ने आकर कहा महाराज। कई विदेशी पण्डित आये हैं राजाने कहा बुलाओ उनमें से बररुचिने आकर यह श्लोक पढ़ा॥

सर्वेषान्नृपशूनांच ग्राहका बहवो भुवि॥
पण्डितानांगजेन्द्राणांग्राहकोनृपतिर्गुणी॥ ५८॥

सब तरहके मनुष्य और चैापायोंके तो गाहक संसारमें बहुत लोगहैं पर पण्डितों और हाथियोंके गाहक केवल एकगुणी राजाही होते हैं॥ कालिदास ने यह नीति का श्लोक पढ़ा॥

जानीयात्सङ्गरेभृत्यान् बान्धवान्व्यसनागमे॥
भार्य्यांक्षीणेषु वित्तेषु युद्धेशूरन्धनेशुचिम्॥ ५९॥

सिपाही संग्राममें और भाई दुःखमेंस्त्रीदरिद्र में और शूरलड़ाईमें जाना जाताहै और ऐसेही धनके विषयमें मनुष्यकी पवित्रता जानीजातीहै॥ महेश्वर ने यह पढ़ा॥

चित्ते ते भोज निर्व्याजन् द्रवन्तृणकणायते॥
क्रोधे विरोधिनांसैन्य म्प्रसादे कनकोच्चयः॥ ६०॥

भो राजा भोज । क्रोधसे बैरियोंकी फौजऔर प्रसन्नतासे दानकरने में सोने का ढेरतेरे चित्तमें तिनकेके कणकी बराबर जंचताहै ॥ इनश्लोकोंको सुनकर राजा ने बहुत प्रसन्न होकर उन्हों का सत्कारकिया औरकहा कि और सब पण्डितकल आवें इतनेमें चोपदार बोला महाराज । सांझहुई यह सुन राजा ने अधिकारियों को ये हुक्मदिये (पहला)यहथा कि कल पहरदिन चढ़ेसभा होगी उसमें सब काम काजी लोग हाजिर हों (दूसरा) जो जिस अधिकार में नियत है उससे उस विषयकी बातें शास्त्रके अनुसार पूछीजावेंगी जो कोई उस अधिकारके योग्य न ठहरेगा दूसरे काम पर पलटा जायगा (तीसरा) नियुक्त और अनियुक्त सब पण्डित आवें उनमें से जो२ निपुण होंगे गुणके अनुसार नियत किये जावेंगे(चौथा) मेरे नगरमेंजो२ मूर्खहों वर्षकी अवधिमें सबकाम छोड़ पढ़कर कुछ कविता करनेके योग्य होजावें नहीं तो वर्षके बाद निकाले जावेंगे और उनके मकान बिदेशी पण्डितों को जो कि यहां आवेंगे दिये जावेंगे इसपर आपही यह श्लोक पढ़ा ॥

पुत्रःप्रियोभवेन्मूर्खः सपुराद्बहिरस्तुमे ॥
कुम्भकारोऽपियोविद्वान्सतिष्ठतु पुरेमम ॥ ६१ ॥

देखो लड़का बड़ा प्यारा होताहै अगरमूर्खहो उसे भी बाहर निकालो और कुम्हार को अगर विद्वान्हो बसनेदो इनहुक्मोंको देकर राजा तो महलोंमें सिधारे और आज्ञा लेखकने उसीरात को आज्ञापत्र अर्थात् परवाने लिखकर जारीकर

दिये जिसजिसने वह परवाना पढ़ा वा सुना अपने अधिकारके विषयकी पोथीदेखी और कलराजा कौनसी बातपूछै इसी सोच बिचार में सब रात काटी देखो उसी रातसे लोगों का मन एकही साथ खेलकूदसे हटकर अपने२ अधिकारकेविषय की विद्याके पढ़ने लिखनेकी ओर लगगया उसी रातको पटनेके राजाका पुरोहित उसकीलड़की लीलावती (जो विद्यामें बड़ी निपुण और चतुर थी) राजा भोजसे सगाई करनेका पत्रलेकर आया सगाईपक्कीहुई और बिवाहछः महीनेपीछेठहरा राजा सबेरेही उठकर शालामें जिसमें कि आप पढ़ेथेगये देखतेही सब सहपाठी बहुत प्रसन्नहुये इन्होंने भी सभोंका यथोचित सन्मान किया और बाचस्पति विद्यार्थी को जो सभों में मुख्यथा उसे वहां की अध्यापकताका अधिकारदेकर एकगांव उसके भोजन वस्त्रकेलिये करदिया और सदा दो सौ विद्यार्थी पढ़ने का हुक्मदिया उन विद्यार्थियोंकेभोजनवस्त्र भी सरकारसेही करदिये यह सुनकर मणिमिश्रने राजा के पास आकर कहा महाराज। धन्यहै आपको गद्दीपै बैठे हुये आज पांचवांही दिनहै परंतुआपके प्रतापसे सारे नगर में सिवाय पढ़ने लिखने के दूसरी बातकी चर्चा नहीं, आप बड़े २ बुद्धिमानों से भी बढ़कर प्रबन्ध करतेहैं और अभीतो आपकी अवस्था केवलपन्द्रहही वर्षकी है सचहै प्रतापी मनुष्यकी प्रकृतिही प्रतापका हेतुहोतीहै न कि अवस्था — यथा॥

सिंहःशिशुरपि निपतति मदमलिन कपोलभित्तिषुगजेषु॥

प्रकृतिरियं सत्ववतान्नखलु वयस्तेजसो हेतुः ॥ ६२ ॥

शेरका छोटासा भी बच्चा बड़े मतवाले हाथी को देखपंजा मारनेको दौड़ता है क्योंकि प्रतापी की प्रकृतिही ऐसी होती है कुछ उमर प्रताप का हेतु नहीं यह सुन भोजने कहा मेरी इच्छा ऐसी है कि मेरे नगर में कोई मूर्ख न रहे सब पढ़जावैं इसमें सब पंडितलोग उद्यतहोंतो कुछ बड़ीबात नहीं इसबातको सुन मणिमिश्रने कहा भगवन्। मेरी शाला में सौ विद्यार्थी हैंजो कि व्याकरण न्याय साहित्य मीमांसा आदि शास्त्र पढ़ते हैं उनको भी चलकर देखिये यह बात सुन राजा सब अपने सहपाठियों से बोले कि मुझे सारे इस नगरमें तथा और २ जगहभी विद्या का प्रचार करना है इस से तुम सबको अच्छे २ अधिकार पर नियत करदूंगा जीविका की कुछ शङ्कामत करना यह कह कर और मणिमिश्र को साथले उनकी शाला में भोज पधारे वहां मणिमिश्र के लड़के इन्द्रदत्तने जो केवल पांचही वर्ष का था राजाको देख आशीर्वाद का यह श्लोक पढ़ा ॥

त्वद्यशोजलधौभोज निमज्जनभयादिव ॥
सूर्य्येन्दुविम्बिमिषतो धत्ते तुम्बीद्वयन्नभः ॥ ६३ ॥

हेराजन्भोज । आपके यशरूपी समुद्र में डूबने के डरसे आकाशने सूर्य और चांदरूपी दो तौंबे धारण किये हैं ॥ इस श्लोक को उसपांचवर्ष के बालक के मुख से सुन राजा बड़े आश्चर्य में हुये और २ विद्यार्थियों से भी जो पन्द्रह २ बीस २

वर्षके ये प्रश्न करने लगे पर जब इस बालक के बराबर किसीको बोलनेमें न देखा मणिमिश्र से बोले क्या कारण है कि यह इन्द्रदत्त पांच वर्ष का लड़का सब विद्यार्थियों से संस्कृत बोलने में अधिक है ? इसका उत्तर मणिमिश्र अच्छीतरह जब न बतासके तो उनकी स्त्री विद्याधरीने कहा महाराज इसका कारण यहहै कि मैं इसलड़के से संस्कृतहीमें बोलतीरहतीहूं जहां कहीं अशुद्ध बोलता है तुरंत बता देतीहूं और ये बिचारे लड़के कि दश बर्ष की अवस्था में तौ यहां पढ़ने को आये फिर कहां तक सीखेंगे इस पर यह श्लोक पढ़ा ॥

नवमृत्स्नांसमादाय सुकरोतियथामतिः ॥
तथैवमातावालञ्च भाषयेच्चयथारुचिः ॥

जैसे कुम्हार नई मिट्टी को लेकर चाहता है वैसा बरतन बनाता है इसी प्रकार माता भी चाहती वैसीही भाषा सिखा सक्ती है ॥ लड़का स्त्रियों में बहुधा तीनचार बर्ष तक रहता और उन्हीं की जो भाषा हो वही सीखता है इसीसे स्त्रियोंका पण्डिता होना और अच्छी बिद्यापढ़ना बहुत उत्तम और उपकारी होता है क्योंकि—

यावन्नसाक्षरामाता तावत्तद्बालबालिकाः ॥
निरक्षराहितिष्ठन्ति बिनोपायसहस्रकैः ॥

जिन लड़कों की मा पढ़ी नहीं होती वे बिना हजारों उपायकिये सुधरनहींसक्ते किंतु मूर्खही रहजाते हैं अर्थात् कोई दूसरा उपायकर मनसे पढ़ावेगा तो पढ़ेंगे नहींतो खैर ॥ यह भी बात

करती कि हे राजन लीलावतीविद्या में बड़ी निपुण सुनने में आती है और आप के नगर में कोई भी स्त्री वैसीनहीं इससे मैंभी जानती हूं कि उसका चित्तयहां न लगेगा इस कारण किसीउपाय से यहां की स्त्रियों को भी विद्या की ओर लगाना उचित है यह बात सुन राजाभोजने मणिमिश्र से कहाकि तुम अपनी शालामें दोसौ विद्यार्थी पढ़ाया करो भोजन वस्त्र के लिये एक गांव सरकार से पावोगे और विद्याधारी का मनहो तो नगर में सौ लड़कियों के भी पढ़ाने के लिये एक पाठशाला नियत कीजाय कि उसमें पढ़ाया करे उसकोभी एकगांव मिलेगा तथा लड़कोंकी और भीदो शाला नगर में नियत होंगी और आजही उनमें पढ़ाने के लिये अध्यापक नियत होजावेंगे इस प्रकार चार शाला तो नगर के चारों कोनों में और आपकी शाला के पास लड़कियों की शाला नियत होजावेगी यह सुन विद्याधरी ने पढ़ाने का स्वीकार करलिया राजा ने मणिमिश्र की शालाके पास पुत्रीशाला नियतकी औरअपने महलों में आकर स्नान पूजन भोजन किया यहां सभा में पहिलेही से मंत्री बुद्धिसागर अपने दर्जे पर आबैठा फिर घोड़े और फ़ौजका सेना पति रणधीर, दीवानी फ़ौजदारी का मुख्य स्वामी अर्थात् न्यायाधीश धर्मपति, कोशाधीश अर्थात् खजान्ची लक्ष्मीधर, व्यवस्थापक फणीन्द्र और देशी विदेशी पण्डित सब अपने २ अधिकार के अनुसार आकर बैठते गये इसके उपरान्त

आज्ञा लेखक अर्थात सरिश्तहदार बुद्धिसेन को साथ ले राजा ने आकर सिंहासन सुशोभित किया और सब अधिकारियों का जो उनको देखकर उठेथे आशीर्व्वादादि लेकर यथा स्थान में बैठाया इतने में घंटा जो कचहरी की छत के बीच राजा ने टंगवायाथा कि हरकोई मुक़द्दमह वाला जिसको अहल्कार लोग राजा तक नहीं पहुंचने देते खुदरखी को खींच के घंटेको हिलावें और अपनी इत्तलअ देवें आपसे आप बज उठा राजाने घंटे की आवाज़ सुनतेही चोबदारसे कहा इस मुक़द्दमह वाले को जल्द लाओ चोबदार ने घंटे की रखीके पास जाकर देखा तो एक बुढ़िया खड़ी है उससे पूछा तेरा क्या मुक़द्दमह है॥ उसने कहा तीन महीनेसे मैं फिरतीहूं परकोई मेरा मुक़द्दमह नहीं सुनता इससे अब राजाहीसे कहूंगी यहसुन चोबदार ने बुढ़िया को राजा के पास हाज़िर किया राजाने बुढ़िया से पूछा कि तुझे क्या दुख है॥ बुढ़िया ने हाथ जोड़कर कहा महाराज! मेरे एक आम का पेड़ है उसकी एक डाली के आम जो लाखमें आने चार एक के थे गांव के ज़मीदारके लड़केने अपने साथी सङ्गतियों समेत आकर हिलाये और सबके सब चुराले मैं इस मुक़द्दमे के लिये दो तीनमहीने तक फिरी पर न तो ज़मीदार ने सुना न उस ज़िलअ के न्यायाधीशने कुछ ध्यानदिया यह सुन बुढ़ियाको बाहर बैठने का चोबदार को हुक्म दिया और धर्मपति नाम मुख्य न्यायाधीश से कहा शास्त्र में

मुक़द्दमे कितनी तरह के हैं ॥ उनमें इसकी गिनती है या नहीं यह सुनने के योग्य है या नहीं ॥ न्यायाधीश ने कहा महाराज ! यह मुक़द्दमह तो शास्त्र के अनुसार सुनने के योग्य है क्योंकि मनु के अनुसार विशेष करतो मुक़द्दमे अठारहही तरह के हैं पर उनकी शाखें बहुत सी हैं — यथा

तेषामाद्यमृणादानन्निक्षेपस्स्वामि विक्रयः ॥
सम्भूयच समुत्थानन्दत्तस्याऽनपकर्म्मच ॥
वेतनस्यैवचाऽऽदानं सम्बिदस्यव्यतिक्रमः ॥
क्रयबिक्रयानुशयो विवादः स्वामिपालयोः ॥
सीमाबिवाद धर्म्मश्च पारुष्योदण्डवाचिके ॥
स्तेयञ्च साहसञ्चैवस्त्रीसंग्रहण मेवच ॥
स्त्रीपुन्धर्म्मो बिभागश्चद्यूतमाह्वय एवच ॥
पदान्यष्टादशैतानि व्यवहारस्थिताबिह ॥
एषामेव प्रभेदोऽन्यः शतमष्टोत्तरम्भवेत् ॥
क्रिया भेदान्मनुष्याणां शतशाखो निगद्यते ॥ ६६ ॥

क़र्ज़ देनालेना १, अपनाधन किसीके पास रख देना याने धरोहर २, बिना मालिक के उसकी चीज़ बेच डालनी ३, अपना २ धन देकर एक व्यापारमें बहुत मनुष्यों का लगना या औरों को लगाना और अपने धनके अनुसार हिस्सह लेना याने साझा ४, एक वस्तु किसी को देनी फिर किसी कारणसे लेलेनी ५, नौकर से नौकरी कर-वाकर उसे नौकरी न देनी ६, आपसकी प्रतिज्ञा के यापञ्चोंकी ओर से अथवा राजाकी ओरसे जो नियम ठहरे उसके बिरुद्ध करना ७, बेचने और खरीदनेके पीछे मालमें तकरार करनी ८, मालिक

और चरवाहे का विवाद ९, गांव वा धरतीकी हद्दका झगड़ा १०, गालीआदिदेना ११, मारना कूटना १२, चोरी १३, जोरावरीसे किसीकाधन आदि लेलेना १४, पराई स्त्रीको छेड़ना १५, स्त्री और पुरुषका धर्म्म १६, दाय भाग १७, धन का और घोड़े आदि जीवोंकी बाजीका जुआं १८, इस प्रकार मुक़द्दमे १८ तरह के हैं इन्ही के एकसौ आठ १०८ भेद होजाते हैं और मनुष्यों के जुदे२ चलने से इनमेंसे प्रत्येकके और भी अन्य भेद होजाते हैं और यह बुढ़िया का मुक़द्दमह तो इन अठारहों मेंसे चोरी का भेद है इसीसे सुनने के योग्य भी है अगर इसके वे आम चार आनेकेथे तो जमीदारके लड़केसे शास्त्रके अनुसार उनका पांचगुना मोल अर्थात् बीस आनेबुढ़िया को दिलवाने चाहियें जैसे मनुने कहा है-यथा

शाकानामार्द्रमूलानां हरणेफलमूलयोः ॥
गोरसेक्षुविकाराणां तथालवणतैलयोः ॥
सर्व्वेषामल्पमूल्यानाम्मूल्यात्पञ्चगुणोदमः ॥ ६० ॥

साग, जमीकन्द, रतालू आदि गीले कन्द बेर नारङ्गी, आम आदि फल और मूल दूध और ईखका रस और दही तथा राब आदि उनके विकार नोन तेल और जो कुछकि थोड़मोलकी वस्तहैं उनमेंसे जो कोई कुछ चुरावे उससे उस वस्तुके मोलसे पांच गुना मोल राजा दिलाकर चोरको छोड़देवे॥ किन्तु राजाको चाहिये कि अधर्म्मीदुष्ट मनुष्योंको दण्डदेनेमें सदाउद्यत रहै और शासन करनेमें कोमल न हो-यथा

शासनेयोमृदूराजा सस्वराज्यबिनाशकः ॥
नसूचेगामणिर्बेध्यो बिनालोहस्यतन्तुना ॥ ६८ ॥

आतङ्कबैठाने और शासन करने में राजाको कोमल प्रकृति होना अपने राज्य का बिगाड़ना है क्योंकि सिवाय लोहेके तारके कहीं कपासकेसूत से मणि नहीं बिन्धता ॥ तथा एक के शासन से बहुत मनुष्यों का शासन होजाता है-यथा

पशोस्समूहाद्यदिचैकताड़ने ॥
यथासमस्ताःप्रभवन्तिताड़िताः ॥
तथैवचातङ्कविधौसुशासिते ॥
जनैसमस्ताःप्रभवन्तिशासिताः ॥ ६९ ॥

देखो बहुतसे चौपायोंका झुण्ड चलाआताहै और उसेफेरा चाहो तो उसझुण्डमेंसे आगेके एक चौपाये के हटाने और मारनेसे जैसे सब चौपाये डरके हटजाते हैं इसीतरह एक मनुष्यके दण्डदेने से सब मनुष्य डरने लगते और शासित होजाते हैं॥ राजानेकहा इसमुक़द्दमेमें जमींदार और उसके लड़केको यद्यपि बड़ी सजादेनी मुनासिबहै परमैं चाहताहूं कि ऐसे छोटे २ मुक़द्दमे मेरे पास न आया करें अपने २ देश के न्यायाधीशही निबेड़ लिया करें यथा समभा और कामकाजियों को आतङ्कभी होजावे इसलिये जमींदार से बुढ़िया को सौ रुपये दिलाये जावें और लड़के समेत वह चारवर्ष क़ैदमें रहे न्यायाधीश छः महीने और उसके नीचे के लोग तीन तीन महीने के वास्ते मुअत्तल रहें इसी पर यह श्लोक पढ़ा ॥

नकश्चिच्चण्डकोपानामात्मीयोनामभूभुजाम् ॥

होतारमपिजुह्वन्तंस्पृष्टन्दहतिपावकः ॥ ७० ॥

क्रोध में आकर राजा किसी को अपना नहीं गिन्ते यहांतक कि पुत्रको भी सख़्त सज़ा देते हैं जैसे कि आग होम करनेवाले होताकोभी छूनेसे जलादेताहै ॥ यहभी कहाहै कि जिस राजाको खुशी और ग़ुस्सह का कुछ भला बुरा फल न हो, उसे प्रजा नहीं चाहती—यथा ॥

प्रसादोनिष्फलोयस्ययस्यक्रोधोनिरर्थकः ।
नतंराजानमिच्छन्तिपतिंषण्डमिवस्त्रियः ॥ ७१ ॥

जिसराजाकी प्रसन्नताऔरक्रोधनिष्फलहोता है उसकोप्रजा भी नहीं चाहती जैसेकि नपुंसक पतिकोजोरू ॥ इतनाकहकर यह श्लोक भी पढ़ा

अपराधद्वयेक्षान्तिर्भविष्यतिसदाडिका ॥
अपराधेतृतीयेदेपदाच्च्युतिरसंशया ॥
इतिसर्व्वेविजानन्तुप्रसिद्धाऽधिकारिणः ॥
अमतोयत्नतःकार्य्यमस्जन्तुसुविचारतः ॥ ७२ ॥

इस बातको तुम सब अधिकारी ध्यान देकर सुनो, और याद रक्खो कि मैं पहले एक अपराध को क्षमा करूंगा और दूसरे पर सज़ा दूंगा पर तीसरे अपराध में तो उसे डरदेसे बरतरफ़ ही करदूंगा इससे तुम सबको उचित है कि विचार और मिहनत से सरकारी काम को यत्नके साथ किया करो नहीं तोपीछे पछताओगे ॥ तदनन्तर राजा ने फणीन्द्र व्यवस्थापक से पूछा कि न्याय करनेवाले शास्त्रके अनुसार कैसे होने चाहिये? यह सुनकर फणीन्द्र बोला ॥

श्रुताऽध्ययनसंपन्नाधर्मज्ञास्सत्यवादिनः ॥

राज्ञासभासदःकार्य्यारिपौमित्रेचयेसमाः ॥ ७३ ॥

जिन्होंने वेदादि अच्छी तरहपढ़ा और बहुत कुछ देखा सुनाहो जो धर्म्मशास्त्रऔर नीतिशास्त्र आदि जानतेहों सचबोलतेहों न किसी से ईर्षा न द्वेष न बहुत स्नेह रखते हों और अपने काममें स्थिरवृत्ती हों उनको राजा न्याय करनेका अधिकार देवे यह सुन राजाने सब सोलह पण्डितों को जोकि वहां आये थे बुलाकर शास्त्र विषय के प्रश्न पूछे पीछे उनमेंसे कालिदास १ वररुचि २ महेश्वर ३ बाण ४ मयूर ५ बामदेव ६ हरि ७ शङ्कर ८ विनायक ९ मदन १० विद्याविनोद ११ वेह्लण १२ गोविन्द १३ पुण्डरीक १४ इन पण्डितों को सदा अपनी कचहरीमें रहने का हुक्म दिया और कहा कि जहां कहीं मुक़द्दमों में व्यवस्थाके द्वारा वा और किसी तरह भूल चूक हुवा करे बतलादिया करो जितना ख़र्च तुम्हारेयहां हुआ करे महीने के महीने सरकार से लिया करो जीविकाअच्छीकरदीजायगी कोकिल औरतारेंद्र इन दो पण्डितोंको उन दो शालाओंमें जिनको सबेरे मुकर्रर करआयेथे पढ़ानेके लिये नियत किया औरएक २ गांव देकरदो २ सौलड़कों के पढ़ानेका हुक्मदिया तथाउन चौदह पण्डितों से कहाकितुम बारी२से हर अठवारे मेंपांचों पाठ-शालाओंमें परीक्षालेनेजायाकरौ पढ़ानेकी परि-पाटीबतायाकरो औरमैंभीकभी २ जाकरपरीक्षा लिया करूंगा तदनन्तर रणधीर जो घोड़े और सवारोंकी फ़ौजकासेनानीपति था उसनेकहाकि

हमकल सबेरे घोड़ोंके रिसालोंको आकर देखेंगे सवारों की चतुराई देखकर उनको कुछ इनआम भी दिया जावेगा इसके अनन्तर मुख्य न्यायाधीश धर्मपतिसे कहा कि न्यायाधीश जो न्याय करने में चतुर और निरालसहैं जितना अब पाते हैं उसका सवाया पाया करें पर जो मूर्ख और आलसी हों जितना पाते हैं उसका पौना पावें और जिस न्यायाधीश का किया हुआ मुक़द्दमह शास्त्र के बिरुद्ध दीख पड़ेगा वह अधिकार से निकाला जायगा इससे तुमको उचित है कि सब न्यायाधीशों को अच्छी तरह दौरा करके देखो कि कैसे तो वे शास्त्रमें प्रवीण हैं और कैसे व्यवहार में हैं फिर इसका हाल लिखकर मेरे पास लाओ और व्यवहार में मनु और याज्ञवल्क्य जी की स्मृतियों को जारी करो क्योंकि—

मन्वर्थविपरीताया सस्मृति र्न्नप्रशस्यते ॥
वेदार्थोपनिवन्धृत्वात्प्राधान्यंहिमनोःस्मृतम् ॥७४॥

मनुजीकेबिरुद्ध कोईभीस्मृति अच्छीनहींक्योंकि मनु ने वेदका सार अर्थ रक्खा है इसी से उन्हीं की स्मृति सबसे उत्तमहै और उसी के अनरोधी याज्ञवल्क्य स्मृति है इसीलिये ये दोनोंही ब्यबहार के लिये उपयोगी हैं इनमें नीति न्याय और धर्म्म आदि सबका अच्छी तरह वर्णन है इसीसे मुख्यकर इन्हींदोके अनुसार न्यायाधीशोंको बरतना उचितहै हे विद्यार्थियो! देखो इसीसे अङ्गरेज बहादुर के भी वर्त्तमान में व्यवस्था पक इन्हीं दो स्मृतियो के अनुरोध से व्यवस्था लिखते हैं॥

इतने में चोबदार ने कहा महाराज! नगर का कोतवाल हाज़िर है राजा ने कहा आने दो कोतवाल ने आकर प्रणाम किया राजा ने पूछा नगर का क्या हाल है?

कोतवाल सब तरह से प्रजा आनन्द में है और किसी बात की उपाधि नहीं॥

राजा नगरमेंकितनेचौकीदारहैं?

कोतवाल नौ सौ॥

राजा कितने घर पीछे एक चौकीदार है?

कोतवाल सौ घर पीछे॥

राजा तुम कितनी रातगयेघूमने को नगर में जाते हो?

कोतवाल आधीरात के पीछे॥

राजा। चौकीदार लोग नगर की रपट किस समय तुम्हारे पास बोलने को आते हैं?

कोतवाल चौथे पहर संध्या को॥

राजा-नगर में अच्छी तरह चौकसाई रक्खो जिसमें चोरी डाका खून न होवे और प्रजाचैनमें रहे इसी प्रकार सब अधिकारियों से उनके २ अधिकारकी बातें पूछींइतनेमेंचोबदारने आकर कहा महाराज तीनघड़ी दिन और बाक़ीहैऔर सब पण्डित हाज़िर हैं राजाने कहा बुलाओसब पण्डित आये राजाने वररुचि और वेल्हणसेकहा विद्या में सबसे कुछ पूछो और इनको यथा योग्य

द्रव्य देकर बिदा करो यह कह कर दो चार साहबोंको लेकर बाजार और बागकी शोभा देखने निकले तो क्या देखते हैं कि हरएक मनुष्य अपना २ काम कर रहा है और लड़कोंको पढ़ाता भी जाता है पास पुस्तक रक्खी है कुछ उसमें ध्यान है कुछ काम में इस प्रकार सब धन्धेवालों और और मनुष्यों को देख कर राजा ने मंत्री बुद्धिसागर से कहा इन लोगोंकी पढ़ने पढ़ानेकी ऐसी परिपाटी पहिले हीसे है या कि सरकारी हुक्म हुआ है तबहीं से? मंत्री बोला पृथ्वीनाथ यह रीति उसी आज्ञा के होने से कि जो कोई वर्ष की अवधि तक मूर्ख रहेगा नगर से निकाला जायगा और उसका मकान किसी पण्डितको छीनकर दिया जावेगा उसी डर से सब लोगोंको पढ़ने पढ़ानेका व्यसन लगा है॥

यह सुन राजाने घोड़ा खड़ा कर एक जौंहरी को जो आपही कुछ पढ़ रहा था बुलाकर पूछा कि आप क्या पढ़ते हो? उसने कहा महाराज! हम लोग पहिले तो कारवाई के लिये सराफी पढ़ते लिखते थे उसीसे अपना काम भी पटता था पर जबसे आपकी आज्ञा पढ़नेके लिये हुई है संस्कृत वर्णोंकी अक्षरमालाके वर्णोंके पढ़ने का प्रारम्भ कर दिया है सो इन चार दिनों के अर्से में २५ अक्षर तक तो पढ़ लिये हैं आगे पढ़ता हूं यह सुन उसके ऊपर प्रसन्न होकर राजाने कहा मैं तुम्हारे ऊपर इस बातसे बहुत राजी हूं तुम्हारी दूकानसे जवाहिर आदि सरकार मोल लिया करेगी यह कह राजा चल दिये इसचोपसे सारी हाटके लोग और भी

पढ़ने पढ़ाने में मनलगानेलगे और जौहरी तो आनन्द में फूला न समाया कहने लगाओ इसी पढ़नेके कारण राजाने मुझसेआप बातेंकीं और मेरामाल सदाको मोललेने कहाइस अन्तरमेंउस जौहरीके आगेकिसी पण्डितने यह श्लोकपढ़ा॥

विद्यानामनरस्यरूपमधिकंप्रच्छन्नमंतर्द्धनम्॥
विद्याभोगकरीजगद्वशकरीविद्यागुरूणांगुरुः॥
विद्याबन्धुजनोविदेशगमनेविद्यापरंदैवतम्॥
विद्याराजसुपूजिताशुभधनंविद्याविहीनःपशुः॥ ८५॥

विद्या मनुष्यका सबसे अच्छा रूपछिपाहुआ धन सुख भोग की देनेवाली तथा औरोंको वशमें लानेवाली है विद्या सबका परमगुरू औरविदेश में भाई के तुल्य सुखदाई है और विद्याही से राजाओं में मान मिलता है इसीसे जो मनुष्य विद्या नहीं सीखता देखने में तो मनुष्य पर बुद्धि में चौपाये के समान है॥

इस श्लोकको सुन वह जौहरी मगन होकर बोला ठीक बात है बिना विद्या के मनुष्य केवल पशुहीहै निदान राजा हस्तिशालाके पास पहुंचे तो क्यादेखतेहैं किसामने एक मस्तहाथी भारी रस्सोंसे बंधा और उन्हीं रस्सोंके तोड़ने में जोर जना रहाहै पर वे ऐसे मोटे और पोढ़े हैं कि तनक भी नहीं तड़कते यह हाल देख राजा ने मंत्रीबुद्धिसागर की ओर देखा देखतेही उसने यह श्लोक पढ़ा॥

बहूनामल्पसाराणांसमवायोहिदुर्ज्जयः॥
तृणैर्व्विधीयतेरज्जुर्ब्बध्यंतेदन्तिनस्तया॥ ८६॥

देखिये महाराज! तिनका तनक से छूने से टूटजाता है पर बहुत से जब वेही तिनके मिल कर रस्से बनजाते हैं तो उनसे ऐसे २ हाथी बांधे जा सक्ते हैं और ये उन्हें तनक भी नहीं तड़का सक्ते॥

इस कहने से प्रयोजन यह है कि महानिर्बल भी आपसमें मिलजाने से बड़े २ बलवानों कोभी हटा सक्ते हैं यह सुन राजाने कहा मेरेबिचारमें भीयहीश्लोक आयाथाचतुराईऔरपण्डिताईभी यही कहाती है कि समयपर बातको प्रसङ्ग से समझलेना और कहदेना पण्डितउसीका नामहै जो बिना कहने और प्रेरणा के दूसरे के मनके अनुसार संकेत से समझे और कामकरे—यथा

उदीरितोऽर्थः पशुनाऽपिबुध्यतेहयाश्चनागाश्चवहन्तिनोदिताः।
अनुक्तमप्यूहति पंडितो जनः परेङ्गितज्ञानफलाहिबुद्धयः॥ ७०॥

पण्डितवही बुद्धिमान्है जोबिना कहे प्रसंगसे बातको समझेक्योंकि कहने और प्रेरणा करनेसे तो हाथी घोड़े आदि पशु भी समझ जाते और बोझ लेजाते हैं और बुद्धिवही कहाती है जो दूसरे के मनकी बात प्रसंग वा दशासेहीसूचित करलेवे॥ जो मनुष्य बहुत पढ़गया पर तौभी न समझा उससे गधा भी कोई२ बातमें अच्छाहै॥

पापठीतिसकलंहिवांमयम्बोध्रुधीतिनचाकिञ्चिदप्यसौ।
स्वभारमिवगर्दभस्सदावाक्यहीनमपिबोधुधीतिसः ७८॥

जो मनुष्य सबविद्या पढ़गया और एक कोभी

अच्छीतरह न समझा उससे गधा भी जिसपर जवाहिर और रत्न लदतेहैं अच्छाहै क्योंकिमूर्ख होनेपरभी वह उस भारको समझलेता औरले चलता है॥ ऐसी बातेंकहते २ बाग़में पहुँचे वहां पेड़ोंकी हरियाली फलफूलोंकी शोभा औरउनके बोझसे पेड़ोंकी लचकदेखराजाने यह श्लोकपढ़ा

भवन्तिनम्रास्तरवःफलोद्गमैः नवाम्बुभिर्भूमिविलम्बिनोघनाः॥
अनुद्धताःसत्पुरुषाःसमृद्धिभिः स्वभावएवैषपरोपकारिणाम्॥ ७६॥

सज्जनपरोपकारियोंके जितनी सम्पत्ति बढ़ती है उतनेही वे सादे और नम्र होजाते हैंदेखोये पेड़सदा ऐसे ऊंचे रहतेहैं कि मानों बादलों को छूतेहैं पर जब जल से सीचे जाते और फलते हैं लचककर धरती में लटक पड़ते हैं ऐसेही नवीन जलसे पूरित होने से श्याम घटा नीची झुक आती है इससे प्रयोजन यह है कि सज्जन और परोपकारियों का तो यही स्वभाव है कि बिभव पाकर नम्र होजाते हैं परंतु तुच्छ जन बिभव में ऐसे उबल उठतेहैं कि जामे से बाहर होजाते हैं॥ ऐसी शिक्षा की बातें करते हुये राजा बाग़की सैरकर महलों में पधारे॥

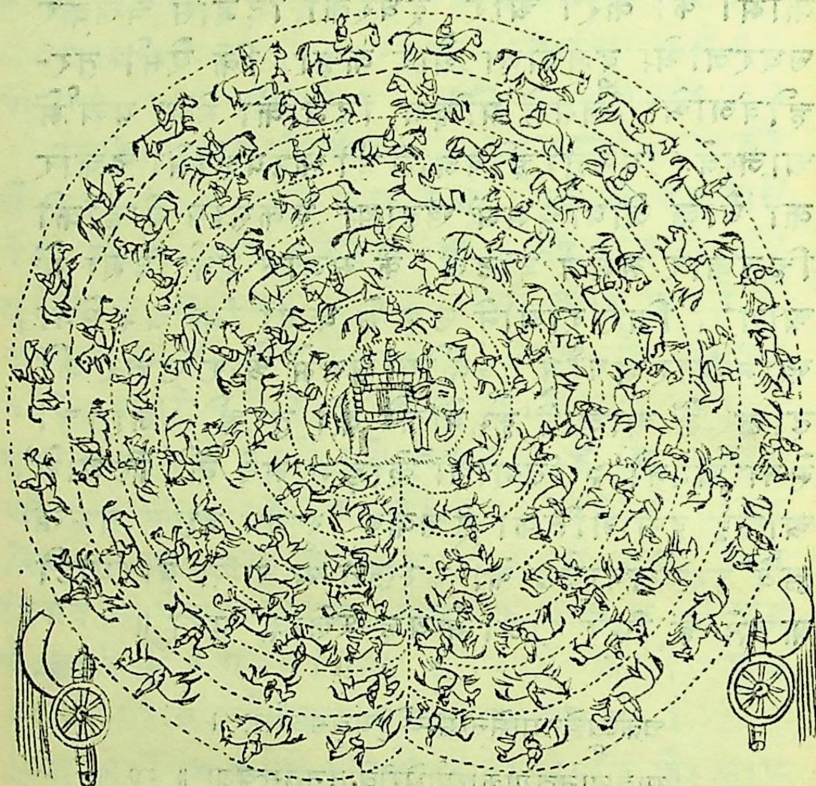
दूसरे दिन सबेरे रणधीरसेनानीपति को साथ लेकर घोड़ों की सेना देखनेगयेउज्जैननगरीकी सबकी सबलाखों घोड़ोंकी सेना जोआज्ञानुसार सजी हुई श्रेणीबद्ध सवारी के आने की प्रतीक्षा में खड़ीथी राजा को देखकर एक साथ तलवारों को उठाकरमाथे लगाकर राजा भोजको प्रणाम किया राजाने खड्गउठाकर प्रणामलिया और

उत्तर दिशामें अपना हाथीखड़ा करवाकरसेना वाद्यादक अर्थात् तुरही वालेको जो सब प्रकार कीबोलीतुरहीसे होकरबजाता और एकस्थानमें खड़ा होकर दूर २की सेनाको जताता है कि सब कामों को करो और इधरकी दिशासे चलकर उधरजाओ बुलवाया और कहा कि ऐसी तुर-हीबजाओ जिसमें पश्चिम दिशाकी सेना पूर्वमें आजावे उसकेतुरहीबजातेही झटपच्चीसों हजार का थोक जोपश्चिममें खड़ाथा एकसाथ घोड़ोंकी हिनकार समेत बादल के समान पूर्व दिशा में आगया फिर राजाने उस से कहा कि अब सेना स्थानान्तरअर्थात् पूर्वकीपश्चिममें और उत्तर की दक्षिणमें आजावे इसबोली की तुरही बजातेही सेना अपनी २ दिशाको छोड़सामने की दिशामें आगई इस गतिको देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुये इस क़वायद को संस्कृत में गति परिपाटी कहते हैं फिर राजा ने यह श्लोक पढ़ा॥

चक्रव्यूहेनमांसेनासम्वेष्ट्यतुसर्व्वतः।
सावधानतयाकार्य्याभेरीबादनतस्त्वया॥ ८०॥

। अर्थात तुरहीवाले से यह कहा कि तुरही बनाकर कहदो किसावधानीसे सबसेना चकाबू के क़िलअ़ के आकार खड़ी होजावे और मुझे बीच में घेरलेवे॥ यह सुन उसने ऐसी बोलीकी तुरही बजाई कि सारी सेना चकाबू के क़िलअ़ के आकार खड़ी होगई॥

चक्रव्यूह अर्थात् चकाबू के समान क़िलअ़ का बांधना ॥



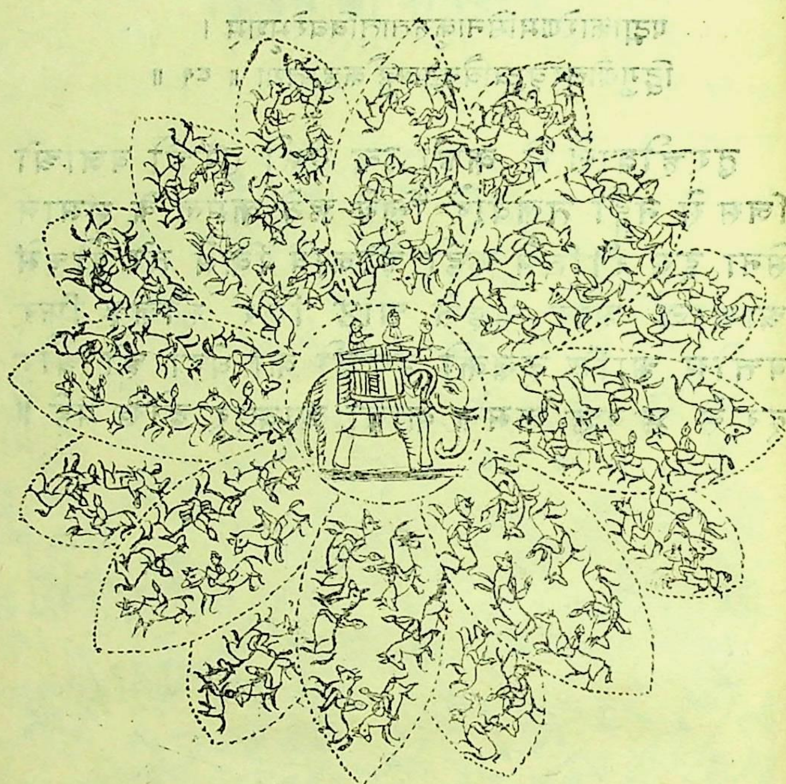
रणधीर सेनानीपतिने हाथजोड़कर कहा श्री महाराज ? देखिये किस फुरती से सेना आकर खड़ी होगई कहीं एक जव भरभी अंतरनहीं है राजा यहसुन और सेनाकी चतुराई देखकरबज़त प्रसन्न ज़ये और कहने लगे कि इस प्रकार का क़िलअ़ बांधना तौ बज़त सुगम है पर इस से

पद्मदुर्ग्ग अर्थात् पद्माकार क़िलअ़ का बांधना
तनक कठिन है इस पर यह श्लोक बोले ॥

पद्माकारेणमांसेनाकुरुतात्विबरेभृशम् ।
द्विगुणोत्तरवृद्ध्यावैनग्नखड्गैकहस्तया ॥ ८१ ॥

तुरहीवाले से कहा कि ऐसी तुरही बजाओ
जिस से नङ्गी तलवारें लिये हुये कमल के समान
सेना इस रीतिसे खड़ी होजावे किमैं तो बीचमें
आजाऊं और पहले आठ फिर सोलह फिर
बत्तीस आदि दलकी टुकड़ी का घेरा हो और
दूर से हुबहू कमल कासा आकार दीख पड़े ॥

कमल व्यूह अर्थात् कमल के आकार क़िलअ़ का बांधना ॥



ऐसी बोलीकी तुरही बजातेही सारी फ़ौज ऐसी फुरतीके साथ आठसोलह बत्तीस आदिकी टुकड़ी बांधकर और अपने२ स्थानमें खड़ीहोकर कमलके आकार बनगईकि राजा देखतेही प्रसन्न होगया और सबको मासिकसे पांचगुने इनआ़म देनेकी आज्ञा देकर रणधीर सेनापति से कहने लगाकि आजमुझको कईकामहैं इससे हथियार

होगी इससे उचितहै किअब सबअपने२ काममें नौकर चाकर रहें यह कहकर आपही शिकार खेलनेलगे पर हिरन खरगोश आदिका शिकार खेलते२ इकले घोड़े पर सवार उज्जैन नगरी से छः कोस पर आकर रस्ता भूल गये तब एक किसानके लड़केसे जो खेतकीरखवाली कर रहा था रस्ता पूछने लगे उसने यह श्लोक पढ़ा॥

इतोधारास्तिधारेशसार्द्धयोजनमायता।
दक्षिणस्यांस्थिताभातिदक्षमार्गेणगम्यताम्॥ ८२॥

भोराजन्? यहांसेधारा अर्थात् उज्जैन नगरी छः कोस दक्षिण दिशामें है आप दहने हाथहो कर जाओ किसान के लड़के से इसश्लोक कोसुन बहुत प्रसन्न होकर मनमें कहने लगेकि ईश्वरने चाहातो मेरेनगरमें इसीतरह काछी कुर्मी किसानसबलिखेपढ़े होजावेंगे ऐसाही बिचारकरते२ नगर में पहुंच कर सभा में गये वहां कुछ राज का काम करके प्रसन्नतासे संध्याके समय महलों में पधारे इसप्रकार राजाराजके प्रबन्ध और अपने नगरमें बिद्याके प्रचार करनेमें सदाप्रयत्न करता रहता पर पढ़नेपढ़ानेका ऐसाप्रचार न करसका कि जिससे मणिमिश्रके लड़के की तरह और भी छोटे२ लड़के संस्कृतभाषाको बोलने चालनेलगते अलबत्तह इतनातो होगया कि राजाकी शिक्षा रूपीदृष्टिसे पुरुषोंके मनरूप खेतोंमें कुछ२ बिद्या रूपी बीजके अंकुर फूटनेलगे परस्त्रियोंकी चित्त रूपीभूमि ऊपरहीरही यद्यपि इस बिषय में मणि मिश्रकीसी बिद्याधरी नगरकी लड़कियोंकोकुछ

पढ़ातीलिखातीभी रही परबिना किसी बड़ेकी प्रेरणाके मनलगाकर काहेको पढ़ातीथी इतना तबभी उसने कियाकि अपनी शिक्षारूपी फांससे सुधारकर स्त्रियोंकी मनरूपी ऊषर भूमिमें विद्या का बीज डालदिया था और उसबीजके अंखुओं के फूटनेके लिये भोजकीस्त्री लीलावती जो विद्या में निपुण और कविता में कुशल थी शिक्षारूपी दृष्टि की प्रतिज्ञा कर रहीथी कि कब भोजका व्याहहोकर लीलावतीआवेगी और अपनीविद्या का प्रभाव दिखाकर उसमूर्ख जौहरी की तरह इनमूर्ख स्त्रियों को भी पढ़ानेकी ओर लगावेगी इस प्रकार विद्याधरी लीलावती के आने का अभिलाष सदा करती, गिना करती कि आज का भी दिन गया लड़कियों को पढ़ाती और शिक्षा के ऐसे२ श्लोक सिखाती रहती—यथा

येबालभावेनपठन्तिविद्यांयेद्रव्यवन्तःखलुधर्म्महीनाः ॥
तेशोचनीयाइहजीवलोकेमनुष्यरूपेणमृगाश्चरन्ति ॥ ८३ ॥

जो मनुष्य बाल्यावस्था में विद्या नहीं सीखते और जो धनवान् होकर धर्म नहीं करते इस लोकमें मनुष्य कासा स्वरूप धरे पशुओं के समान हैं और शोक के पात्र हैं ॥

विद्याददातिविनयम्विनयाद्यातिपात्रताम् ।
पात्रत्वाद्धनमाप्नोतिधनाद्धर्म्मन्ततस्सुखम् ॥ ८४ ॥

विद्यासेनम्रता, नम्रतासे योग्यता और योग्यता से धन मिलता तथा धन से धर्म्म बढ़ता और धर्म्म से सुखी होता है ॥

येनकेनाप्युपायेन नरेणाशुभमिच्छता ॥
त्यक्त्वासर्वम्विधेयोवै गुणविद्योपसंग्रहः ॥ ८५ ॥

जो मनुष्य शुभ कीर्ति और भलाई चाहताहै सब काम छोड़ के केवल गुण और विद्याही को सीखता है ॥

गुणेनैवमनुष्याणा मादरोभुविजायते।
यथादीप्त्याश्मनामध्ये मणेस्तुबहुमौल्यता ॥ ८६॥

मनुष्य का आदर सम्मान जगत् में गुण ही से होताहै जैसे पत्थरों के बीच मणि का मोल केवल दीप्ति सेही अधिक होता है॥

विद्याधरी को इस तरह शिक्षा करते २ छः महीने बीते भोज के विवाह का दिन भी आन पहुंचा और बरात की धूम धाम होने लगी देखो छः महीने बात कहते बीत गये जान भी न पड़े तथाहि॥

यथानिद्रावशोलोको नवेत्तिसमयावधिम्।
तथास्वपरकार्य्येषु प्रशक्तोन्द्रियमानसः ॥ ८७ ॥

जैसे सोता हुआ मनुष्य समय की अवधि को नहीं जानता इसी प्रकार अपने पराये कामों में लगे हुये मनुष्य का भी समय नहीं जान पड़ता बहुत जल्द देर होजाता है॥

सारे नगर में राजा के व्याह की इतनी खुशी हुई कि लोगोंने ब्याहके आनन्द से अपना२काम काज करनाभी छोड़दिया परराजा को जैसासब पहिले राजके कामोंमें लगाहुआ देखते थे वैसा ही देखा बड़ों की रीति भी यही है–यथा

सम्पत्तौचविपत्तौच महतामेकरूपता।

समुद्रश्चैकरूपोहि सदाभातिधरातले ॥ ८८ ॥

बड़े मनुष्य क्या तो सुख में क्या दुःख में सदा एकही से रहते हैं जैसे समुद्र क्या वर्षा में क्या गर्म्मीमें सदा एकसाही रहता है इसके विपरीत जैसे छोटी २ नदियां तनक से मेहमें कैसी उमड़ उठती हैं वैसाही तुच्छ मनुष्यों काभी हाल है॥

इसके सिवाय राजा की सदा की प्रकृति थी कि ईश्वर के ध्यान और धर्म्म के कामों में मन रखता और इस श्लोक को पढ़ा करता ॥

यावत्स्वस्थमिदंशरीरमरुजं यावज्जरादूरतो ।
यावच्चेन्द्रियशक्तिरप्रतिहतायावत्क्षयोनायुषः ॥
आत्मन्येवहितावदेवविदुषा यत्नोविधेयोमहान् ।
संदीप्तेभवनेतुकूपखननंप्रत्युद्यमःकीदृशः ॥ ८९ ॥

जबतक शरीर स्वस्थ रोगसे बचा और बुढ़ापे से नहीं दबाया गयाहै इन्द्रियां अपनेबशमें और आयुर्दा बाक़ी है बुद्धिमान् मनुष्य को चाहिये किउसी अवस्थामें धर्म्म वा सत्कर्म्म और मोक्षका उपाय अच्छी तरह करलेवे क्योंकि पीछे शिथिल होजाने पर उपाय करना मानों घर में आग लगाने के समय कुवां खोदना है ॥

आशय यहहै कि ऐसा विचार करते रहनेसे मनुष्य अधर्म्म से बचता और धर्म्म में लगता है यहां कोईऐसा प्रश्नकर बैठेकि अच्छा या बुराजो होनहार है अवश्य होता ही है इस से उपाय करने की चिन्ता वृथा है क्योंकि ॥

यदभाविनतद्भावि भाविचेन्न तदन्यथा ।
इतिचिन्ताविषघ्नोय मगदःकिन्नपीयते ॥ ९० ॥

भलावरा जो होनहार है अवश्य होगा और जो अनहोनी है कभी होने ही की नहीं ऐसा निश्चय कर मनुष्य निस्सन्देह क्यों नहीं रहता वृथा उपायों के सन्देह में क्यों लगा रहता है ॥

इसी प्रकार ईश्वर ने जिसको जितना धन वा सुख दुख नियत कर दिया है उसे उतना अवश्य मिलेगा उपाय चाहे जितना करो पर कुछ भी काम न आवेगा -- यथा

दैवेनप्रभुणास्वयञ्जगति यद्यस्यप्रमाणीकृतं ।
तत्तस्यापनयेन्मनागपिमहान्नैवाश्रय:कारणम् ॥
सर्वाशापरिपूरकेजलधरे वर्षत्यपिप्रत्यहम् ।
सूक्ष्माएवपतन्तिचातकमुखेद्वित्रा:पयोबिन्दव: ॥ ९१॥

लोक में ईश्वर ने जिसके लिये जितना नियत कर दिया है उतना ही मिलता है न कहो बड़े के आश्रय से अधिक भी मिल सक्ता है ऐसा नहीं क्योंकि उसी मेह को जो सब जगह अनाप सनाप बरसता है बिचारे पपी हे के मुख में सिवाय दो तीन बूंद के और नहीं पड़ती -- यथा

यद्धात्रानिजभालपट्टलिखितंस्तोकम्महद्वाधनम् ।
तत्प्राप्नोतिमरुस्थलेपिनितराम्मेरौनचातोधिकम् ॥
तद्धीरोभववित्तवत्सुकृपणाम्वृत्तिम्वृथामाकृथा: ।
कूपेपश्यपयोनिधावपिजलंगृह्णातितुल्यङ्घट: ॥ ९२ ॥

ईश्वर ने थोड़ा या बहुत जितना जिसके माथे में लिख दिया है उतना वह मरुदेश में भी जहां पानी भी नहीं होता वहां जाकर बैठे अवश्य पावेगा और अधिक मिलने की आशा कर सुवर्ण की खानि में भी जावे पर उससे अधिक न

मिलेगा इससे धीर्य्य रक्खो और सन्तोष करो. धनवानों के आगे वृथा यांचना करने से कुछ अधिक नहीं मिलजाता क्योंकि देखो घड़ेको कुयें में डालो वा समुद्र में पर उसमें जितना समा सक्ता है उतनाही पानी समावेगा ॥

इस प्रश्न का उत्तर यह है कि भाग्यके भरोसे पर रहना और ऐसी बातें करनी अन्धे लूले आदि अपाहिजोंका काम है न कि भले चंगोंका जिनको ईश्वर ने पौरुष दिया है उन्हें ये बातें सोहाती भी नहीं इसीलिये ईश्वरने हरएककाम के सिद्ध करने के लिये उपाय और यत्न बनादिये हैं और देखते हैं कि जिस कामका उपायकरते हैं झटपट पूरा होजाता है फिर उपायको छोड़ अपाहिज और अन्धेलूलोंकी तरह हाथपर हाथ रखकर बैठे रहना बहुत अनुचित है तथाहि ॥

बलपौरुषहीनेन हस्तनेत्रविकारिणा ।
भाग्यानुरोधःकर्तव्यः शक्त्यभावादयम्विधिः ॥ ६३ ॥

जिन मनुष्योंके बल पराक्रम नहीं या जो अन्धे लूले आदि अपाहिज हैं उन्हों को असामर्थ्य के कारण सन्तोष के लिये भाग्य के अनुसार वर्त्तना और धीरज करना अवश्य है नाक समर्थ को इस के सिवाय बुद्धिमान को यह भी चाहिये कि विचार कर काम करे—यथा

कर्म्माश्रितम्फलंपुंसाम्बुद्धिःकर्म्मानुसारिणी ॥
तथापिसुधियाभाव्यंसुविचार्य्यैवकुर्वता ॥ ६४ ॥

मनुष्यके कर्म्म के आधीन फल और बुद्धि कर्म्मके अनुसार होतीहै अर्थात् जैसा कर्म्म बनता वैसीही

बुद्धि होजाती है तथापि बुद्धिमानको उचितहै कि बिना बिचारे काम न करे क्योंकि बिचार और अनुमति के साथ करने से कामके न सिद्धि होने में भी कोई दोष नहीं लगाता॥ इसी से व्यवहार में भाग्य और उपाय दोनोंही के अनुसार बर्त्तना पड़ता है—यथा

शकटीचक्रवद्वेद्योभाग्योपायोहि कर्मणा ॥
एकेनैवतुचक्रेणशकटीगन्तुमक्षमा ॥ ६५ ॥

ईश्वरने व्यवहार की गाड़ी के चलने के लिये भाग्य और उपाय दो पहिये बना दियेहैं इसीसे जैसे गाड़ी बहुधा एक पहिये से नहीं चल सक्ती वैसेही व्यवहार को भी जानों॥

राजा सभा में अपना राज्यका काम देख रहे थे इतने में चोबदार ने आकर कहा महाराज! बरात की निकासी के मुहूर्त्त की घड़ी आगई है यहसुन महलोंमें पधारे वहां बिवाह की सब रीति भांति होजाने के पीछे हाथी घोड़े और प्यादोंकी फौज सजाकर बरात चली सब लोग हाथी रथ घोड़ों आदि की चालोंको बड़े कौतुक से देख कर यह कहने लगे॥

आयस्तमैक्षतजनश्चटुलाग्रपादम् ॥
गच्छन्तमुच्छलितचामरचारुमश्वम् ॥
नागम्पुनर्मृदुसलीलनिमीलिताक्षं ॥
सर्वःप्रियःखलुभवत्यनुरूपचेष्टः ॥ ६६ ॥

घोड़ोंको देखो कैसे फफकते फुरकते गजगाहों से शोभित और जल्दी २ पैर उठाकर चलते हैं और हाथियों को देखो कैसे झूमते लचकते

धीमे २ पांव उठाते और आंखें मीचकर चलते हैं सचहै अपनीही चाल सबको फबती है दूसरे की चले तो बेढब जंचती है ॥

इस प्रकार सनकार बरातने नगर से पांच २ कोसपै जहां कि आम अमिली जामन आदि के घने पेड़ थे जाकर पहिला बसेरा किया सब अपने २ निबाह के अनुसार छाया में उतरे कोई न्हाने लगे कोई खाने किसी ने चौपड़ सतरंज बिछाई किसीने चहर, इसके अनन्तर कोई तो घटती हुई बड़ी छाया को जिसमें कि पहिले उतर पड़े थे छोड़कर बढ़ने वाली थोड़ी छायामें जा पड़े और कोई अपना आराम देख जहां के तहां पड़े रहे ॥

छायामपास्यमहतीमपिवर्त्तमाना ॥
मागामिनीञ्जगृहिरेजनतास्तरूणाम् ॥
सर्वैर्हिनोपनतमप्यपचीयमान ॥
म्वर्द्धिष्णुमाश्रयमनागतमभ्युपैति ॥ ६० ॥

बहुत से मनुष्य जानेवाली घटती हुई बड़ी भी छाया को छोड़ २ कर आने वाली बढ़ती हुई छोटी सी छाया में जापड़े ॥

इससे प्रयोजन यहहै किसब मनुष्य बढ़तीकेही साथी होतेहैं घटतीका साथी कोई नहीं होता अर्थात् जिसे बढ़ता देखते हैं उसेही सेवने लगते हैं जिसे घटता देखते चुपकेही छोड़ देते हैं ॥

इस प्रकार जब सब फौज छाया में उतरी हाथी भी छाया मेंहीं बांधे गये और ॥

नोच्चैर्य्यदातरुतलेषुममुस्तदानी ॥

माधोरणैरभिहताःपृथुमूलशाखाः ॥
बन्धायचिच्छिदुरिभास्तरसात्मनैव ॥
नैवात्मनीनमथवाक्रियतेमदान्धैः ॥ ६८ ॥

जबऊंचे पेड़ों के नीचे न समा सके हाथीवानों ने हाथियों को इशारह किया और उन्होंने आपही सब भुगोड़ई डालियां तोड़ अपने बन्धन के लिये जगह करदी इससे प्रयोजन यह है कि मूर्ख जन आप अपने लिये उपाधि खड़ी करलेते हैं अर्थात् हाथी डालियों को नतोड़ते तो वहां काहेको बांधे जाते ॥

हाथियों को बांधकर घोड़ोंको बांधने लगेतो उनमें से कोई हिनहिना रहाहै कोई छुड़ा कर दौड़ रहाहै ॥

उत्खायदर्पचलितेनसहैवरज्वा ॥
कीलंप्रयत्नपरमानवदुर्ग्रहेण ॥
आकुल्यंकारिकटकस्तुरगेणचाशु ॥
युद्धायविद्रुतमनुद्रवतान्यमश्वम् ॥ ६९ ॥

कोई घोड़ा दौड़ते हुये दूसरे घोड़े से लड़ने के लिये खूंटेसमेत अपनी अगाड़ी पिछाड़ी तुड़ाकर दौड़रहा है सारी फ़ौज को व्याकुल कररहा है और साईस लोग हजारों युक्तोंसे पकड़ने में लग रहे हैं पर हाथ नहीं आता इस कहनेसे प्रयोजन यह है कि अपनी २ जाति का स्वभाव कोई नहीं छोड़ता भलाहो चाहे बुरा इसके अनन्तर सांझके समय कोईतो घोड़ोंको दौड़ा रहाहै कोई कुत्तों के लिये खर्गोशके पीछे दौड़ रहाहै-यथा

अल्पप्रयोजनकृतोतरुरप्रयासै ॥

रुद्गीर्णलोष्टलगुडैःपरितोनुरुद्धस् ॥
उद्यन्तमद्भुतमनोकहजालमध्या ॥
दन्यःशशम्विहतवांल्लगुडाञ्चनेन ॥ १०० ॥

पेड़ोंकेबीचसे उठकर दौड़तेहुये देखखर्गोशको लोगोंने चारों ओरसे ऐसा घेरा कि कोईढेले फेंकतेजाते कोई लाठियां उठाये दौड़तेजातेऔर घोड़ेके लिये बड़ाप्रयास कररहेहैं इतनेमेंकिसी और ने चलते २ ऐसी लकड़ी फेंकी कि खर्गोश मरगया और उसने अपना शिकार अपने हाथसें किया तबतो वे बिचारे सबकेसब अपना सा मुंह लिये देखतेकेदेखतेही रहगये इससे प्रयोजन यह है कि देखो एकही समयमें कोईतो थोड़ीहीसी मेहनत करनेसे फलको पहुंचजाते और कोई बड़ी मेहनत करनेपर भी कोरेके कोरेही रहजातेहैं ॥

यह संक्षेपसे पहिले कूचका वर्णन किया इसी तरह बरात कूच दरकूच चलती २ पटने नगरमें पहुंचीवहांबड़ी धूम धामसेभोजका लीलावतीके साथ ब्याह हुआ भोजके श्वशुरने दायजमें इतने हाथी घोड़े दिये कि इनके साथ एक और दूसरी बरात होगई अपनी लड़की लीलावतीकी टहल के लिये विद्या में बड़ी चतुर एक मदनमालिनी नाम दासी तथा बहुतसी और भी अनुदासीदीं ॥

यह संक्षेपसे वर्णन किया अबप्रकृतिका वर्णन करताहूं कि लीलावती समेत भोजकी बरातबड़े चैन चान और धमधामसे अपने उज्जैन नगर में आ पहुंची पहुंचतेही लीलावती और उसकी दासी मदनमालिनीकी विद्याप्रगल्भता कीचर्चा

घर२ फैली तबतो यह मणिमिश्रकी स्त्री विद्याधरी विद्यामें चतुर अपनी दोचार चेलियों समेत लीलावती के पास आई और दो श्लोकों करके आशीर्वाद दिया उनमेंसे पहिला यह था॥

अयेबालेलीलावतिकुरुमतिम्भोजनृपते॥
त्वमप्येवन्देनन्दिममुभययोरर्ज्जनविधौ॥
सुविद्यासल्लक्ष्म्योसत्यजतिनयथापाणियुगलम्॥
ययोरेकादन्यम्परमपिपराहस्तमनिशम्॥ १०१॥

हे लीलावती! और हे राजा भोज! तुम दोनों प्रीति पूर्वक अपने दोनों हाथों से दोनों लक्ष्मियों को ऐसा बढ़ाओ कि दाहने हाथको विद्यालक्ष्मी और बांयेंको धनलक्ष्मी कभी छोड़ने का मन न करे॥ दूसरा यह था॥

द्वयोस्सहायेननरान्स्वनीवृति॥
स्त्रियश्चनित्यंकुरुतन्धनाढ्य॥
विद्यावतीश्चापियथासमीयुः॥
रमोतथामूरुभयश्चसौख्यम्॥ १०२॥

फिर इन लक्ष्मियों करके राजा भोज पुरुषों को और स्त्री तुम स्त्रियोंको अच्छी तरह सम्पन्न करो कि जिससे सब लोग धनलक्ष्मी पाकर इस लोकमें सुख और विद्या लक्ष्मी को प्राप्त होकर परलोक में मुक्ति पावें॥

यह सुनकर रानी लीलावती बहुत प्रसन्नहुई आदर सत्कार करके विद्याधरीको सिंहासन में बैठाया और कहने लगी कि तुम विद्यालक्ष्मी के बढ़ानेमें मेरी सहायक हो तो मैं थोड़ेही दिनों

में हर एकस्त्री को विद्यामें निपुण किया चाहती हूं क्योंकि यह काम भी अवश्य है—यथा ॥

स्त्रियस्तथापाठनीयायथाताःकार्यवस्तुनि ॥
पुम्वत्प्रकृतिमाधायसाधयेयुरनाकुलाः ॥ १०३ ॥

हर एक स्त्री इस तरह पढ़ानी चाहिये कि हरएक कामको जैसे मर्द करतेहैं वे भी धीरज से कर लिया करें और घबराया न करें ॥

रानीलीलावतीके अमृतरूपीवचनोंको सुन कर बिद्याधरी हरी भरी होगई कहनेलगी कि छः महीने से इसी आशमेंथी कि कब रानीजी आवें और कब स्त्रियोंके मनको विद्याकी ओरलगाकर मेरे श्रमको सुफलकरें ईश्वरकी कृपासे आज मेरी शालामें सौ लड़कियां पढ़तीहैं परविना राजाकी प्रेरणा और मानके अच्छी तरह पढ़नेमें मन नहीं लगातीं मेरे पतिकी शाला में दो सौ बिद्यार्थी पढ़तेहैं वहां राजा आप जाते परीक्षा लेते और यथा योग्य पारितोषिक देकर मानभी करते हैं इससे दिनों दिन लड़कों की बुद्धि ऐसी तीव्र होती जातीहै कि कईविद्यार्थी पण्डित होगये राजा लड़कियों के बीच आते शरमाते हैं इसीसे मेरी शालामें नहीं आते कभी श्री रानीजी! आपभी इसीतरह पहिले से मेरीशालामें आतीं परीक्षा लेतीं और विद्याकी अभिलाष करवातीं तो मेरी भी लड़कियोंमें से दसपांच पण्डिता होगई होतीं यहसुन रानीलीलावती बोली मिस्राणीजी! मत घबराओ ईश्वरनेचाहातो ऐसा प्रबन्धकरूं कियोड़ी ही अवधिमें आपकी शालाकी लड़कियां लड़कों

से भी विद्यामें अधिक होजावें और इस नगरकी घर२की लड़कियां आपहीआप तुम्हारी शालामें आकर पढ़ें इसबातको सुन विद्याधरी बहुतआनन्दितहुई और मदनमालिनी दासी को अपनी चेलियोंसेसंस्कृतमेंबातेंकरती हुईदेख कररानी से पूछनेलगी कि आपकी दासीने कौन २ सी विद्या पढ़ी है ? रानीने कहा व्याकरण, न्याय, साहित्य इनविद्याओंमेंतो इसका अच्छा प्रवेश है परऔर भी सब विद्याओं को थोड़ी २ जानती है यहकल वापरसों तुम्हारी शालामें लड़कियोंका पढ़ना देखनेआवेगीऔर आजकेआठवें दिनसेंभी आकर परीक्षालूंगी यहकह रानीने मनमें ये श्लोकपढ़े॥

जनताजड़तापनुत्तये यदियत्नस्त्विदधीतपार्थिव: ।
प्रथमम्विदुषाम्प्रुरसक्रिया मथतेभ्योन्वहमर्थमीप्सितम् ॥ १०४॥
प्रवितीर्य्यततस्तुकारयेत् प्रतियत्नंगुणिभि:पुरस्कृतै: ।
पठनायनिजप्रजास्विदं कथितंकारणमुत्तमद्वयम् ॥ १०५ ॥

सबोंमें विद्याकी वृद्धिकरने में दोउपाय मुख्यहैं ॥

पहिला—विद्यावानोंको आदर सन्मानकरके धन देना ॥

दूसरा---पढ़ाने लिखाने का प्रबन्ध करना ॥

ऐसा बिचारकर और विद्याधरी कीचेलियों को पढ़ने में अच्छा देखा उन चारोंको हीरेकी अपनी चारोंअंगूठियां और विद्याधरीको अपना मोतियों का हार देकर बिदा किया यह चर्चा सारे नगर में फैल गई सब ने रानी की विद्या की ओर अभिरुचि देख अपनी २ लड़कियों को पढ़ाने का आरम्भ किया उसीसे बिना प्रयत्न के

विद्या की चर्चा चारों ओर फैलने लगी ॥

बिनाप्रयत्नैर्लोकेऽस्मिन् बनितासुसरस्वती ।
प्रचचारस्वयन्तश्च सरस्वत्यइवावधुः ॥ १०६ ॥

दान ऐसी वस्तु है कि बिनाही दूसरे उपाय केस्त्रियां ऐसी पढ़ने लिखने लगीं कि मानों सरस्वती का रूप बन गईं ॥ इसके अनन्तर रानी लीलावती ने राजाको एक बिनय पत्र लिखा ॥

विनयपत्र

स्वस्ति श्री श्री श्री श्री मदिह लोक परलोक के सुख देनेवाले श्रीराजाजी के चरणों में दासी का प्रणाम पहुंचै ईश्वर कृपाकरै आगे इस नगर के घर २ में बिद्या के प्रचार करने और मूर्ख न रहने की जो प्रतिज्ञा आपनेकी उसका अबकुछ भी ध्यान नहीं है पर शास्त्र में ऐसा लिखाहैकि ॥

सप्रतिज्ञन्नवक्तव्यंराजभिः किंचदेवहि ॥
कथितञ्चेत्तदासम्यक् पालनीयमितिस्थितः ॥ १०७ ॥

राजाओं को चाहिये कि किसी भी बातकी प्रतिज्ञा न करैं कदाचित् करैं तो उसको पूराही करैं और इस प्रतिज्ञा का अच्छी तरह पूरा होना बिना किसी उपाय के कठिनहै पर ऐसी कोई भी बात नहीं जो उपाय करने से सिद्ध न हो इससे मेरी यह प्रार्थना है कि इन दिनोंमें कोई विशेष उपाय करना अवश्य है और इसमें मेरी राय यहहै कि सारे नगर में इसबात का ढंढोरा पिटवा दिया जावे कि ॥

येविज्ञाःपत्तनेषु स्वयमिहकुशला वाच्यमेतेषुनास्ति ॥
येकेचिद्वर्णमाला मपिविदुरमलं लेखनं वालिखेयुः ॥

तैस्वैरंस्वैर्ललाटे सुतिलकमनिशं धारयेयुस्स्वयोग्यम् ॥
येमूर्खा धारयेयु:प्रतिदिनमभित:काकिणी चैवदेया॥१०८॥

नगर में पण्डित हों उनकी तो क्या बात है तथा कम से कम जो वर्णमाला के अक्षरों को भी अच्छी तरह लिख पढ़ लेते होवें माथेपै चन्दन आदि से अपनी २ जातिके अनुसार टीका दिया करें पर जो कि मूर्ख हों सब खाली माथे रहें ॥

इसी तरह स्त्रियां जो पढ़ी लिखी हों माथेमें लाल काली आदि बिन्दी देवें और जो अनपढ़ी हों सूना माथा रक्खें तथा जो कोई मूर्ख होकर इन बातों को करे उससे बीस कौड़ी रोज दण्ड लिया जावे उस दण्डको गली का चौकीदार उगाहा करे और उस समय उनसे कह दिया करे कि तुमको दण्ड देना न हो किन्तु पण्डित होना हो तो सरकारी शाला में जाकर पढ़ो ॥

इस बात के जारी होने से लोग शर्मा कर आपही आप पढ़ने लिखने लगेंगे — इति ॥

इस बिनय पत्रको भोज ने बांच कर न्यायसभा में भेजा और पण्डितों से पूछा कि शास्त्र के अनुसार इस बात का जारी करना उचित है कि नहीं ? न्याय सभावालों ने कहा ॥

नकापिहानिर्भवतीहयस्य। प्रचारणेकर्म्मणि ऐहिकंसत् ॥
परत्रसौख्यंचसमाप्नुवन्ति। प्रचरायेत्तन्नृपतिप्रयत्नात् ॥ १०९ ॥

जिस बातके जारी होनेसे कुछ बिगाड़ न हो बरन लोक परलोक दोनों के प्रयोजन सिद्ध हों उसका जारी करना राजा को उचित है ॥

न्याय सभावालों की अनुमति लेकर राजा ने

ढिंढोरा पिटवाने के लिये आज्ञा लेखक से कोतवाल के नाम आज्ञापत्र लिखवाकर कोतवाली में भेजा कोतवालने उसी समय सब शहर में ढंढोरा पिटवादिया कि कोई मूर्ख माथेपै टीका न लगावे जोकोई लगावेगा सरकार से गुनहगार ठहरेगा और उनसे हररोज़ बीस कौड़ीदण्डकी लीजावेगी इस ढंढोरे के पिटतेही सारे नगर के मूर्खों केमन में खेल कूदकी ओर से उदासी छागई पढ़ने का चाव बढ़ा हरएक ने पढ़ाने के लिये अपने लड़के लड़कियोंको शाला में भेजनेका विचार कियारानी लीलावती से मिलने केलिये नगर के बड़े२ मनुष्यों की जो२ स्त्रियां आईं उनकोभी रानीकीओरसे यही आज्ञाहुई कि आजकलपढ़ने पढ़ानेकेप्रबन्ध में लगरही हूं सावकाश नहीं इससे उचितहैकि विद्याधरीकी पाठशाला में आजके आठवें दिन सब तुम आकर हाज़िरहो वहां मेरा मिलापअवश्य होगा मदनमालिनी दासीको बुलाकर कहा कि कलतुम वररुचि और बेल्हण पण्डितोंको साथले कर पुत्रीशाला में जाकर परीक्षाकरो औरपढ़ने का क्रम लिखकर विद्यार्थियोंके नाम का बीजक सरकार में दाखिलकरो कल कई प्रकारकेप्रबन्ध शाला में करनेहैंगोक जिसमेंमिष्टभाषी विद्याधरी घबराने न पावे यह हुक्म मदनमालिनीको देकर कालिदास आदि चौदह पण्डितोंको जोराजाकी सभामें मुख्य थे बुलाया और ये प्रश्न पूंछे ॥

[प्रश्न]

रानी—यहां के राज्यमें कौनसे लोग बहुत रहतेहैं?

पण्डित—चातुर्वर्ण्य अर्थात ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र और कहीं२ म्लेच्छ भी हैं ॥

रानी–फिर चातुर्वर्ण्य लोगोंको शास्त्र के अनुसार पढ़ना योग्य है या नहीं और यहां धर्मशास्त्र राजा की आज्ञासे सब जगह जारी है या कहीं कहीं?

पण्डित–शास्त्रके अनुसार तो पढ़ना योग्यही है और सबजगह इसराज्यमें धर्मशास्त्र भी जारीहै॥

रानी–धर्मशास्त्र जारी है तो कोई २ मनुष्य कुपढ़ मूर्ख क्यों हैं क्या इनकेलिये धर्मशास्त्र जारी नहीं है और अगरहै तो फिर ये क्यों नहीं पढ़े इस विषय में धर्मशास्त्र के जारी होनेमें किसका दोषहै राजाका वा न्याय सभावालों का अथवा प्रजाका विवेचना करके कहो ?

पण्डित– निरुत्तरहुये और हाथजोड़करकहने लगे कि कल राजा से अनुमति करके इसबातका उत्तर देवेंगे यह कह कर विदा हुये सबनेआकर वे प्रश्न राजाकोसुनाये और कहाकि श्रीमहाराज ! इनका उत्तर हमनहीं देसके क्योंकि ॥

धर्म्मशास्त्रप्रचारस्तु यस्यराज्येनसर्व्वथा ।
तदातद्राज्यभृत्यानान्दोषोभवतितत्वतः ॥ ११० ॥

जिस राज्य में सबतरहसे धर्मशास्त्र जारीनहो वहां राजा और उसकेन्याय सभावालोंका दोष ठहरता है और यही रानीजीका प्रश्नहै किधर्म शास्त्रकेजारी न होनेमें किसका दोषहै विवेचना करके कहो सो महाराज ! इसकेजारी न होनेमें आपका और हमारा सबहीका दोषहै धर्म्मशास्त्र अच्छी तरह जारी होता तो कोई मूर्खही काहेको

रहता क्योंकि धर्म्मशास्त्र में सबसेपहिलेपढ़ने लिखनेही की शिक्षा कही है उसकायही आशयहैकि बिनापढ़नेलिखनेके कोईभी मनुष्यलोक परलोक के लिये कोई काम अच्छी तरह नहीं कर सक्ता यह कहकर निवेदन किया कि महाराज! रानी जी की बुद्धि तो बहुतही अपूर्व्व है सब कामों को धर्म्म शास्त्रहीके अनुसार करती हैं अब उनके प्रश्नों का क्या उत्तर देवें ? राजाने कहा तुम मत घबराओ हम उत्तर देवेंगे किहमारा राज्यथोड़ेही दिनोंसे है धर्म्मशास्त्र कातो कुछ प्रचार देखती हो सो इसी अन्तरमें हुआ है बीच में तो इतना भी नहीं रहा था अब ईश्वर ने चाहा तो थोड़ीही अवधि में अच्छी तरह प्रचार हो जावेगा ॥

दूसरे दिन मदन मालिनी वेल्हण और बररुचि को साथ लेकर पुत्री शाला में गई तो क्या देखती है लोग अपनी २ छोटी लड़कियों को पढ़ने के लिये लाये और लाते जाते हैं विद्याधरी ने मदन मालिनी को आदर से बैठाकर कहा देखो रानीजी का क्या अच्छा प्रबन्ध है कलतक ऐसी दशाथी कि कोई २ तो लड़की बड़ी कठिनाईसे शाला में ठहरती और कोई २ दूसरे चौथे दिन आती थी आज देखिये उसी प्रबन्धके कारण लोग अपनी लड़कियों को आपही आप ले आये और लाते जाते हैं यहांतक कि दोसौ लड़कियां तो इकट्ठी हो गईं पर मैं उनको इकल्लीही नहीं पढ़ा सक्ती हूं इस बातको सुन मदनमालिनी ने यह श्लोक पढ़ा ॥

कक्षांकृत्वातुछात्राणां सहस्रञ्चैवपाठयेत् ॥
एकाकीपण्डितो नित्यं सुखपूर्व्वमतन्द्रितः ॥ १११

एकपाठक दफ़ा बांधकर हज़ार विद्यार्थियों को अच्छीतरह पढ़ा सक्ता है और तुमकुछ सन्देह मतकरो धीरे २ प्रबन्ध होजायगा भला जो लड़कियां अब पढ़ती हैं उनका ब्यौरा क्या है ? विद्याधरी ने कहा मेरे पास सौ लड़कियां पढ़तीहैं उनकी पच्चीस २ की कक्षा है दो कक्षाओं को दिन के पूर्व्व भागमें पढ़ाती हूं दो कोपरमें तथा बीचमें लिखना और काव्य रचना भी सिखाती हूं इसीको सुन लड़कियोंके नामका बीजक लेकर सबसे कुछ थोड़ा २ पूछा तदनन्तर दोसौ लड़कियों को पांति बांधकर खड़ा किया और सबसे पूछा तुम क्या २ पढ़ती हो ? उनमेंसे किसीने कहा मैं (अ) अक्षर पढ़ती हूं किसीने कहा (आ) किसीने कहा (इ) और किसी ने कहा (ई) इन अक्षरों के सिवाय उन लड़कियों में कोई अधिक पढ़नेवाली न निकली तब मदनमालिनी ने सब लड़कियोंकी अ आ और इ ई चारकक्षा बांधकर विद्याधरीकी अनुमतिसे चार लड़कियों को जो शाला में सबसे अच्छी थीं वे कक्षा सौंपी और विद्याधरी से कहा कि इसी प्रकार जिस२ अक्षर की पढ़नेवाली लड़कियां आती जांय उसी २ अक्षर की कक्षा बांधती जाओ और उन चारों उपपाठक लड़कियों को सौंपती जाओ जिसदिन श्री रानीजी परीक्षा लेने यहां आवेंगी

उन उपपाठक लड़कियों को कुछ जीविका भी हो जायगी ॥

इसकेअनन्तर मणिमिश्रआदि चारो शालाओं के पण्डित मदनमालिनी की विद्या में निपुणता सुनकर आपही बुलानेकेलिये आये इसलिये मदन मालिनीने सूक्ष्मही परीक्षा लेकर कहाकि आजके सातवें दिनरानीजी और उनसे मिलनेको नगर के बड़े २ मनुष्योंकी स्त्रियां भी यहां आवेंगी इस तरह विद्याधरीको दिलाशा देकर आप मणिमिश्र की शालामें गईं वहां भी व्याकरण आदि विद्याओं में विद्यार्थियों से प्रश्नकिये और दोसौ नये लड़कों का जो पढ़ने के लिये आये थे पुत्री शाला की तरह प्रबन्ध कर दिया इसीप्रकार और शालाओं में भी गई और थोड़ी २ परीक्षा लेकर रानीके पास पहुंची शालाओं का सारा वृत्तान्त और उनमें लड़के लड़कियों के झुण्डोंके आनेकी खबर सुनाई उसको सुनरानीजी बहुतप्रसन्न हुई रातदिन विद्याके प्रचारकरनेके बंदोबस्तमें रहने लगीं शाला में जानेसे एक दिन पहिले उज्जैन नगरीमें जो २ विद्यापात्र कलपात्र और धनपात्रथे उनकी स्त्रियोंके नाम पुत्रीशालामें आने के लिये चिट्ठियां भेजीं इससे सारे नगर में लीलावती के पाठशाला में जानेका शुहरा पड़गया दूसरे दिन मदनमालिनी समेत रानी विद्याधरी की शाला में आई और खड़ेहीखड़े ये श्लोक पढ़नेलगी ॥

परम शिक्षा ॥

एषा शाला कस्याचिद्धर्म्मशास्त्रं ।

राज्ञस्सम्यक् पाठनार्थं नियुक्ता ॥
अध्येतारस्सं यतास्तत्त्वयेषां ॥
देशत्यागोऽकारिराज्ञाऽपराधात् ॥ ११२ ॥
अधीत्यये मार्गमनुव्रजन्तः ॥
सन्तोषयन्तोऽधिपतिन्तमेव ॥
तानेवसत्कृत्य पदार्थ जातैः ॥
स्वसन्निधौस्थापयिताचिराय ॥ ११३ ॥

यहपाठशाला एक राजाके क़ानून अर्थात् धर्म्मशास्त्र पढ़ानेके लिये नियत हुईहै इसमें उस राजाके अपराधी बंधुये जिनको कि उसने अपराधके कारण अपने समीपी देशसे निकालदिया है पढ़ेंगे उसमें से जो कोई उसका धर्मशास्त्र पढ़कर उसीके अनुसार यहां अच्छी तरह बर्तेंगे उनसे वह राजा बहुत प्रसन्न रहेगा और अनेक तरहकी सम्पत्ति देकर अपने पास बुलावेगा॥

यहकहकर सिंहासन में बैठगई पर सब के मनमें इस बातका बड़ा सन्देह रहाकि कौनतो वह राजा है जिसका क़ानून है और वे बंधुये कौन हैं जो पढ़ेंगे निदान उन सब स्त्रियों में से धर्मध्वज सेठकी स्त्रीने जोबड़ी पण्डिताथी हाथ जोड़कर रानी से पूंछा रानी जी ! हम सब को सन्देहहै कि वह राजा कौन है जिसका क़ानून यहां पढ़ाया जायगा और बंधुये कौन हैं जो पढ़ेंगे ? यह सुन लीलावती ने ये श्लोक पढ़े ॥

सराजराजोदिशिराजराज ॥
स्याऽस्तेऽयसर्व्वं च ससर्व्वदर्शी ॥
व्याप्नोतियस्तत्प्रतिकूलवर्त्ती ॥

तमांशुनिस्सारयतिस्वदेशात् ॥ ११४ ॥

क्षिपत्यजस्रम्भव सिन्धुमध्य ॥
चिराययोऽध्येति तदीयशस्त्रम् ॥
कारागृहेऽस्मिंस्त मसौक्रमेण ॥
निस्तार्य्यसंस्था पयतिस्वदेशे ॥ ११५ ॥
श्रीधर्म्मचंद्रं निजपार्श्वभागे ॥
सदाऽनुकूलम्बि दधेयथावत् ॥
येत्राऽविरुद्धाऽऽचरणास्तदीया ॥
सद्धर्म्मशास्त्रान्मनुजाभवन्ति ॥ ११६ ॥

तानवश्यम्विनिस्सार्य्य दण्डयत्येवनित्तदा ॥
अर्त्थ चंद्रंलोभचंद्र न्नामचंद्रंयथापुरा ॥ ११७ ॥

वह राजा सब राजाओं का राजा सब जगह हाज़िर नाज़िर रहता है उत्तर दिशामें उसकी नगरी है जो कोई उसकी आज्ञा के बिरुद्ध वर्तते हैं उनको अपने समीपी देशसे निकाल कर इस देश में एक नियत अवधि तक क़ैद रखता है कि जो कोई यहां क़ैद में उसका क़ानून पढ़ते और उसके अनुसार चलते हैं उनको मिआद भुगत जानेके बाद बारी २ से धर्म्मचन्द्र की तरह अपने समीपी देशमें बुलवाता है पर जो उस क़ानूनके विरोध वर्तता है उसे अर्त्थचन्द्र लोभचन्द्र और नामचन्द्र की नाईं यहां से भीबाहर निकालकर अपने नौकरोंसे पिटवाता और दुर्दशा करवाता है यह कह कर लीलावतीने बिद्याधरी से पूछा कि उस क़ानून अर्थात् धर्म शास्त्र के उपयोगी कौन २ विद्या यहां पढ़ाई जाती हैं ? ॥

विद्याधरी ने कहा व्याकरण ॥
लीलावती इससे क्या होता है ?
विद्याधरी धर्म्मशास्त्रके पदोंका बोध ॥
दूसरी विद्या न्याय पढ़ाई जाती है ॥
लीलावती इससे क्या प्रयोजन निक-लता है ?
विद्याधरी पदार्थ का बोध ॥
तीसरीविद्या साहित्य पढ़ाई जाती है ॥
लीलावती इससे कौनअर्थ निकलताहै ?
विद्याधरी धर्म्मशास्त्र के श्लोकों का लगाना ॥

इनतीनों विद्याओं को जब मनुष्य पढ़लेताहै धर्म्मशास्त्र के पढ़ने का अधिकारी होता है इस कारण यहां ये विद्या पढ़ाई जातीहैं लीलावती इस बातसे बहुत प्रसन्न हुई और कहने लगीकि यही धर्मशास्त्रके पढ़ाने की परिपाटी है भला कौन २ क्या २ पढ़ती हैं उनके नामका बीजक अर्थात् फिहरिस्तलाओ इतनेमें बड़े२मनुष्योंकी स्त्रियां जो कि वहां आई थीं लीलावती के शिक्षा रूपी बचन सुनकर अपने मनमें विचार से जान गई कि हमीं सबजो इस जगत में आये हैं अप-राधी हैं और अपराधहीके कारण निकालेगये हैं पर इसबात परसन्देहरहाकि धर्मचन्द्र अर्थचन्द्र लोभचन्द्रऔर नामचन्द्रकौनथे और कैसीउनकी दशाहुई तब धर्म्मध्वज सेठकी स्त्रीने हाथजोड़कर लीलावती से कहा हम सबने यहतो जाना कि हमी सब अपराधी बंधुयेहैं पर यह न जानपाया

कि धर्मचन्द्र आदि कौन थे और कैसी २ उनको दशाहुई ? लीलावतीने कहा आज मुझको बड़ा कामहै क्योंकि सब लड़कियों की परीक्षा लेनी है और समयथोड़ाहै पर तुम पूछतीहो इसकारण संक्षेप से कहतीहूं सुनो एक बड़े धनवान् सेठ के धर्मचन्द्र आदि चारबेटेथे कुछदिन बीते वह सेठ मरगया पीछे एक दिन एक जगह बैठे चारोंबेटे जवाहिर सोने चांदी आदि सबधनके बांटने का बिचार कररहेथे कि इतनेमें भांति २ की तसवीरें और शीशोंमेंसे जोजो उसमकान में जड़े थे एकमें उस राजाके दूतकी परछाईं पड़ी तोएक साथ जवाहिर सोना चांदी और तसवीरेंसबकी सब खाक होगईं और ये श्लोक सुनाई दिये ॥

मूढ़ाःकिम्वित्थयूयन्धनमिद मतुलन्तस्यराज्ञोऽस्तिनूनम् ॥
साहाय्येनास्यलब्ध्वाकियदपिकुरुताभोगसौख्यस्वकीयम् ॥
मूलन्तत्पार्श्वमेवप्रतिदिनमयतां येनवःकीर्त्तिलाभो ॥
रत्नस्वर्णप्रभृति सकलम् प्राप्यमातङ्गहीया: ॥ ११८ ॥
भस्ममाचमदमोच्यतिपुरो यद्वदन्तसमयेभविष्यति ॥
बोधनायभवतामुपागतो दूरतस्मरतवाक्यमीदृशम् ॥ ११९
विस्मरध्वङ्कदापीमांशिक्षाम्मे यूयमीदृशाः ॥
इत्थम्बोधेपिकिंयूयम्विस्मिताश्चभविष्यथ ॥ १२० ॥

अरे मूर्खो ! तुम क्या समझतेहो यह साराधन राजाका है इसे ऐसे बर्त्तो कि जो कुछ इसकी सहायता से पैदा होवे उसी से अपना निर्व्वाह करते रहो और मूल धन को सदा राजा के पास पहुंचाते रहो जिससे कि तुम्हारी नेकनामी रहे जवाहिर सोना चांदी आदि पाकर मालिक को

मत भूलो देखो जैसे यह तुम्हारे आगे अब सब खाक पड़ी दीखती है ऐसीही अन्त में होजाने को है केवल इसी बात को तुम्हें समझाने के लिये इतनी दूर से आयाहूं मेरी इस परम शिक्षा को मत भूलना देखो इतने कहने पर भी तुम भूल जाओगे तो अच्छा न होगा॥

यह कह कर परछाईं तो शीशे में से जाती रही और सब वस्तु ज्यों की त्यों होगई इस शिक्षा के सुनने से चारों भाइयोंको सिवाय एक अचम्भे के ज्ञान ध्यान कुछ खाक भी न हुआ वरन थोड़े दिन बाद इस बात को सरासर भूल कर सब भाइयों ने धन बांटकर अपने २ आधीन किया फिर भी एक दिन उस शीशे में परछाईं पड़ी और यह श्लोक सुनाई दिये॥

विस्मृत्यशिक्षामधुनापिकिंचित्॥
प्रहीयतेनान्तिकमस्यराज्ञः॥
पङ्ग्वन्धरंकाभरणेनयुक्तम्॥
तथापिवः येषणमस्यदेयम्॥ १२१॥
नोचेद्यदाकारयिता स्वसन्निधिम्॥
क्षणेनसर्व्वम् प्रविहाय तूर्णम्॥
तदन्तिकंयास्यथ चिन्तयन्तो॥
हाहेतिहाहेति मुहुर्व्वदन्तः॥ १२२॥

तुम मेरी शिक्षा को भूलगये और अभी तक तुमने कुछ राजा के पास नहीं भेजा इससे तुमको उचित है कि अन्धे अपाहिज दरिद्रीलोगोंके द्वारा धनको राजाके पास पहुंचाते जाओ नहींतोजब वहांसे बुलावा आवेगातो एकक्षणभी यहां ठह-

रना कठिन होजायगा सबको छोड़केयहांसेकोरे के कोरे रोते जाओगे और पीछे पछताओगे ॥

यह सुन धर्मचन्द्रकी आंखे खुलगईं उसीदिन सेअपने धनको अन्धेलूलों के द्वारा चुपचापराजा केपास भेजनेलगा और लोभचन्द्र दिनभर रुपयों की थैलियां गिना करता ब्याज बट्टे में रुपयोंको लगाता और कहा करताकि अच्छी तरह रुपयोंको दूना तिगुना वरन चौगुनाकरके राजा के पास भेजूंगा अर्थचन्द्रका यह बिचार ठहरा कि राजाके पासउसके धनका अन्धेदरिद्रियोंकेद्वारा भेजूं और उनसे कुछकाम भी लूं इसी बुद्धि से उसने एक बड़ा स्थान बनवाया उसमें हजारों लाखोंमनुष्यलगादिये किकामभीबनजायगाऔर सारा रुपयाभी राजाके पास पहुंच जायगा इस रीति से सारा रुपया मकानमें लगादिया और नामचन्द्र ने बिचारा कि राजा के पास उस का धन पहुंचाना अवश्य है पर चुप चाप भेजने में मनुष्य आपही आपखाजावेंगे नाम कुछ भी न होगा इससे एक दिन नियत करके अपने स्थान में नक्कारा बजवाके आदमियों कोबुलवाऊं और रुपयोंकी हरएक थैली में अपना नाम लिख के उनके द्वारा राजाके पासभेजदूं इसी बुद्धिसे एक बड़ा बाड़ा बांधकर और रुपये अशरफियों को हाथियों में लदवाकर साराधन बांटदिया मारे भीड़के बिचारे अन्धे लूलोंने सिवाय धक्कोंके और कुछ नपाया रोते हायमींजते सिसकतेके सिसकतेही रहगये और मोटे ताजेकुंगड़ोंने सारा

माल उड़ाकर अधर्म में खो, खा, पार किया इसप्रकार अर्थचन्द्र और नामचन्द्र ने तो अपने मतलब और नाममें सारारुपया खोया परलोभ-चन्द्रने जहांतक बना कौड़ी २ जोड़कर बढ़ाया और जमाकिया न आप खाया न औरों को खिलाया पर धर्मचन्द्रकी कुछ और ही रायथी क्योंकि उसने चुपचाप साराधन अन्धे लूलों के द्वारा राजाके पास पहुंचादिया यहां तक कि आप बिचारा कभी २ भूखा भी रह जाता पर ग़रीबों काखूब मनसे खिलाता इस रीति से मालिक के पास उसकाधन भेजकर आपभी वहीं जानेके आनन्द में सदामगन रहनेलगा निदान उनचारों का समय इस बन्दीखाने से जानेका आन पहुंचा पहिले लोभचन्द्र के पास बुलाने के लिये राजाके दूतआये उसने देखतेही उन्होंसे कहा एक दिन ठहर जाओ तो मैं सब माल असबाब राजाकेपासभेजदूं क्योंकिमैंने दूनाबरन चौगुना कररक्खा है केवल भेजनेही की देरीहै दूतोंने धक्के देकर ये श्लोक पढ़े॥

अरेऽज्ञानविमूढात्मन् लोभमूर्त्तेनबुध्यसि॥
समाह्वानेबिलम्बोऽच क्षणमाचन्नयुज्यते॥ १२३॥
आदावेवधनंकस्माद्राज्ञोऽर्थेप्रेषितन्नहि॥
सत्यमेतन्नतत्तेभूद्धन्ययाप्रहितम्भवेत्॥ १२४॥
अस्माभिस्ताड्यमानस्त्वंशिरसिमुशलैर्दूरदेशम्भयातुम्।
कङ्कन्साहाय्यमस्मिन्नति बिषयपथेभ्यर्थयेथादुरात्मन्॥
चेत्कब्योनिर्दयैस्त्वम् सुनरकभवनेयातनायातयामै।
दूतैस्तद्राजकीयैस्त्वमरणसमयेनीयतेकम्पमानः॥ १२५॥

अरे अज्ञानी मूढ़ लोभी ! तू नहीं जानता कि बुलावे में तनक भी देरी नहीं होसक्की तूने पहिले से धन क्यों नहीं राजाके पास भेजा सच है तेरा होता तो भेजता बस अब चलिये यहां से हमारा मूशल और तुम्हारा शिर और वहां रहने को नरक ॥

इसीप्रकार अर्थचन्द्र और नामचन्द्रके पास दूतों ने आकर कहा चलो राजाके पास सुनतेही बड़ी प्रसन्नतासे कहने लगे हमने तुम्हारे राजाके पास बहुतसा रुपया भेजाहै हम जानते हैं वहां सब इकट्ठा जमाहोगा इसपर दूतोंने यह श्लोकपढ़ा ॥

येन्नाम नाम नितरा मिह बद्धुनाय ।
द्रव्याण्यभीष्ट पुरुषेषु समर्प्पितानि ॥
तेभ्यो न किञ्चिदुपपादित मस्ति राज्ञे ।
तेप्यर्थ चन्द्र परि कुन्थनयैव नीताः ॥ १२६ ॥

अरे अभिमानियो तुमने अपने नाम और प्रयोजन में रुपया खोया राजाके पास तो कुछ भी नहीं भेजा इससे अबचलो यहांसे धक्के खाते ॥

धर्मचन्द्र ग़रीबों का पेट भरता उनको स्थान बिछौना कपड़ा आदि देता और आप कभी २ भूखाही रहजाता मैले कुचैले कपड़े पहनता और एक झोपड़ी में पड़ा रहताथा उस के पास अच्छे लिबास पहनेहुये बड़ी नम्रता से राजा के गण आये उनकेआतेही धर्मचन्द्र के मनमें परम आनन्द हुआऔरझोपड़ीमें चारों ओर हीरे,जवाहिर, पन्ने बिछगये और अनेक तरह की सुगन्धें आनेलगीं गणों ने यह श्लोक पढ़ा ॥

विमान मिदमुत्तमम् ब्रजत येन दासा इमे।
कृतांजलिपुटाः पुरोभिमत कृत्य संसाधकाः॥
निवासयितु मात्मना सविधमेव माकारये।
त्यशेष पतिरीश्वरी विमल भोग्य संभुक्तये॥ १८०॥

चलिये राजा का बुलावा है चढ़ने को यह विमान और टहल को टहलुये खानेको भांति २ के पदार्थ और रहनेको स्वर्ग इस आदर से धर्मचन्द्र विमानमें चढ़कर गणोंसमेत राजाके पास इन्द्रके समान जापहुंचा और स्वर्गका सुख भोगनेलगा॥

सेठानीजी! चारो की ऐसी दशा हुई समझो यह दुनिया खरी और खोटी जिसकी हाटहैजो जैसी चाहे वैसी खरीदे देखो तुम्हारी ख़ातिर शालाके आवश्यक कामको छोड़कर मैंने धर्मचन्द्र आदि की दशा कही भला कुछ हानि नहीं क्योंकि इसके सुनने से लोगों के मनको कुछ न कुछ शिक्षा और पढ़ने की ओर अभिरुचिअवश्य हुई होगी यह सुनते ही सेठानी आंखों से आंसू भर और लीलावती के पैरों को पकड़ कर कहने लगी कि दासी ने इतनी अवस्था और धन व्यर्थही खोया और कभी एक क्षण या एक पैसा शास्त्र के अनुसार परमार्थ में नहीं लगाया इससे दासी की प्रार्थना स्वीकार की जावे कि जो ख़र्च शालामें हो सब दासीही से लिया जावे और जब आप परीक्षाके लिये शाला में आवें दासी भी बुलाई जावे इसको सुनकर रानीने कहा भला तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार की गई पर अभी तुमसे शालाका केवल चौथाई ख़र्च

लिया जावेगा अगर आगे को अधिक श्रद्धा देखी जावेगी तो आधा और श्रद्धा न होगी तो एक२ पैसा तुम्हारा फेर दिया जायगा इस पर और स्त्रियों ने भी ऐसाही चाहा पर रानीने न माना यही उत्तर दिया कि तुम सब और २ लोगोंको पढ़ने की ओर अभिरुचि कराओ यही तुम्हारा देना है इसके अनन्तर रानी ने पहिली कक्षा परीक्षा के लिये बुलाकर सबसे यह बातपूछीकि संसारमें सब से अधिक दुर्लभ और उत्तमकौन वस्तु है? इस पर प्रथम लड़की ने यह श्लोकपढ़ा॥

नरत्वन्दुर्लभंलोके विद्यातत्रसुदुर्लभा॥
कवित्वंदुर्लभन्तत्र शक्तिस्तत्रसुदुर्लभा॥ १२५॥

संसार में पहिले तो मनुष्य का जन्महो पाना दुर्लभ है उसमें भी विद्या होनी यह बात बहुत दुर्लभ है और विद्या होने परभी कविता आनी दुर्लभ है भला कविताभी हुई तो उत्तम शक्ति होनी निहायतही दुर्लभ है॥

यह सुन रानी बहुत प्रसन्नहुई जो २ विद्या पढ़ती थीं उनमें से सबसे कुछ २ पूछा॥

सब से पिछली लड़की से साहित्य में वाक्य के लक्षण का प्रश्न किया उसने यह उत्तर दिया॥

वाक्यंस्याद्योग्यताऽऽकांक्षा॥
मतियुक्तः पदोच्चया॥ १२६॥

पदों के जिस समूह में परस्पर सम्बन्ध हो तो अभाव न हो और आकांक्षा बुद्धिका अविच्छेद और एक आशय पूर्ण हो यह वाक्य अर्थात् बात कहाती है इसी प्रकार सबने उत्तर दिये तदन-

न्तर रानी ने अ आ आदि अक्षरोंको पढ़नेवाली लड़कियों की परीक्षा लेनेसे प्रसन्न होकर उन चारों उपपाठक लड़कियोंका भोजन वस्त्र और आवश्यक खर्च सरकार से कर दिया इतने में कोतवाल ने आकर प्रणाम करके अर्ज की कि आज्ञा के अनुसार वे लोग जो मूर्खता के कारण बीस कौड़ी रोज दण्ड देते हैं हाज़िर हैं॥

रानी ने पूछा भला उनमें से किसी ने भी कुछ अक्षर सीखे हैं ?

कोतवाल –श्रीमहारानीजी ! गरीब लोगों में से जिनको दरिद्रता के कारण बीस कौड़ी रोज दण्ड देना कठिनपड़ता है बहुतेरे तो बालखड़ी तक सीखकर दण्ड देनेसे छूट गये और जो बाक़ी हैं चौथाई वा आधी बालखड़ी तक सीख चुके हैं पर धनवानों की जिनको बीसकौड़ी रोज़दण्ड देना सहज है यह दशा है कि अब तक कोरेके कोरेही हैं यह सुन रानी ने सब दण्ड देने वाले मनुष्यों को पांति बांध कर खड़ा करके सबसे अक्षर पूछे यथार्थ में ग़रीब लोगों ने कुछ २ अक्षर बताये पर धनवान् जो कि कुपढ़ थे पूछने के समय बिचारे मुंह देखते के देखतेही रहगये रानी ने यह दशा देख हरएक को जो कि कुछभी अक्षर सीखगये थे पारितोषिक दिया और जिन्होंने धन के अभिमान से कुछ भी अक्षर न सीखे थे उन के लिये यह दण्ड ठहराया कि हर एक चौकीदार अपनी २ गली के ऐसे धनवान् मूर्खों को लेकर निरन्तर दोघंटे गति अर्थात्बराबर टह-

लाने में रक्खे और १२ दिन में हर रोज चार२ अक्षर सिखावे जो कोई चौकीदार के कहनेसे न आवेगा एकमहीने सरकारी कैदखाने में रहेगा इस दण्ड के सुनतेही सबके कान होगयेऔर थोड़ेही दिनों में बारह खड़ी पूरी की इस प्रकार राजाभोज औररानी लीलावतीने क्रम२से उज्जैन नगरी में विद्या का प्रचार किया औरनाम पाया॥

आगे साहब डैरेक्टर आफ़ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन बहादुर की आज्ञा होगी तो दूसरा भाग भी बनेगा ॥

पहिला भाग समाप्त हुआ ॥

इति

भोजप्रबन्धसार का सूचीपत्र।

इति



[illegible]

9 —

